राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

कन्चन वर्ल्ड

HAR HIN-11223

वर्ष-2, 9 संस्करण

जनवरी 2022

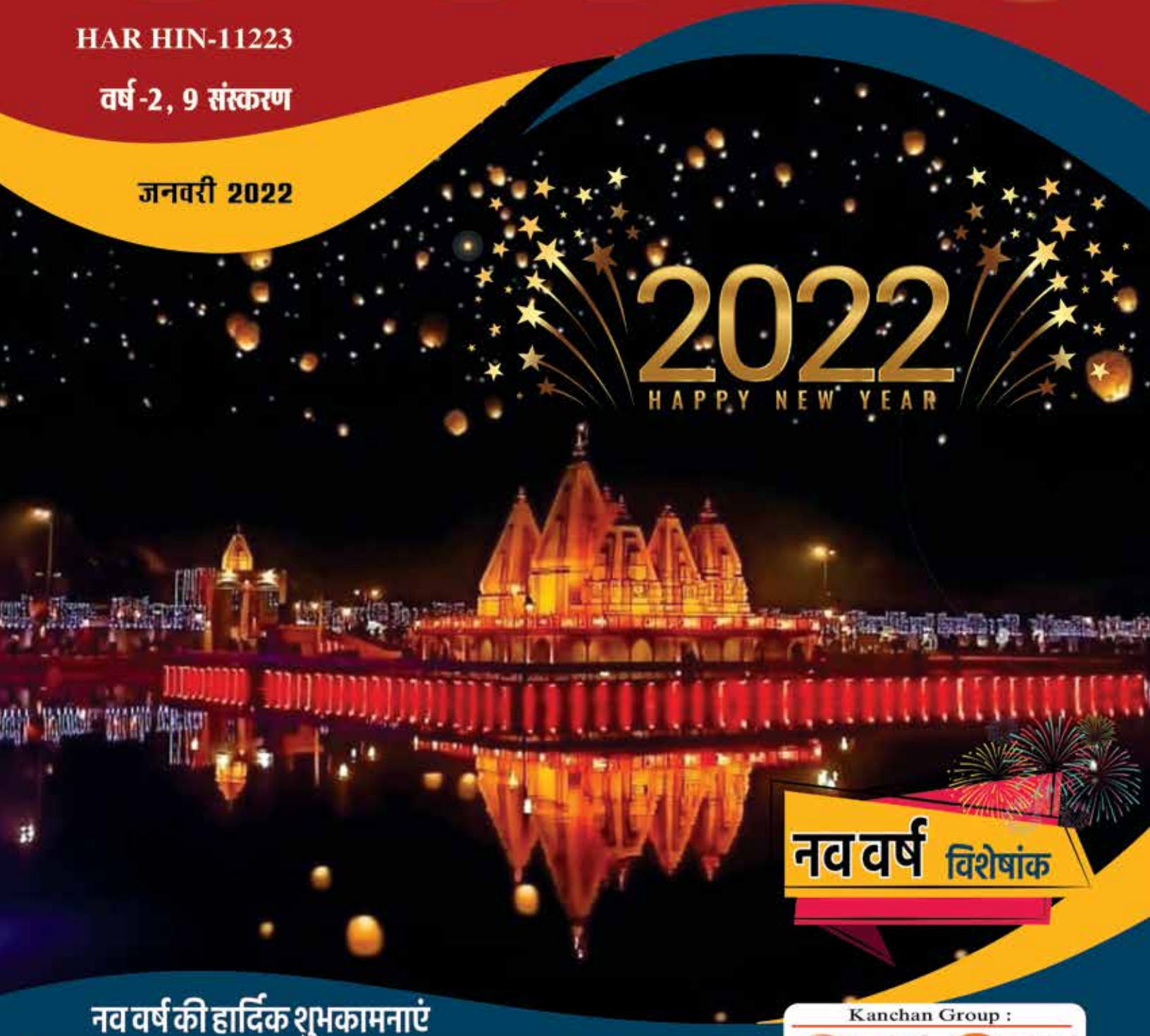

नव वर्ष विशेषांक

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

आप सब भी पत्रिका में अपने लेख, कविता,कहानी और रचनायें छपवा सकते है। सम्पर्क-92155-60025

Kanchan Group :

Gmail YouTube Channel facebook WhatsApp twitter

VISIT…

We wish you a happy new year...

KHANA LAZWAB

2022 happy New year

Available on zomato SWIGGY

fssai Lic. No. 20821011000497

Contact us- 740480-1915
E-mail : khanalazwab@gmail.com
https://www.facebook.com/khanalazwab/

खाना लाजवाब

चंडीगढ़ की मशहुर डिश आपके कुरूक्षेत्र में

नोट : पार्टियों व शादियों में स्टाल भी लगाते हैं।

आप सभी को हमारी ओर से

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

पनीर शोले 50/-प्लेट

दही शोले 30/-प्लेट

टोमाटो सूप 30/-

स्वीट कॉर्न सूप 40/-

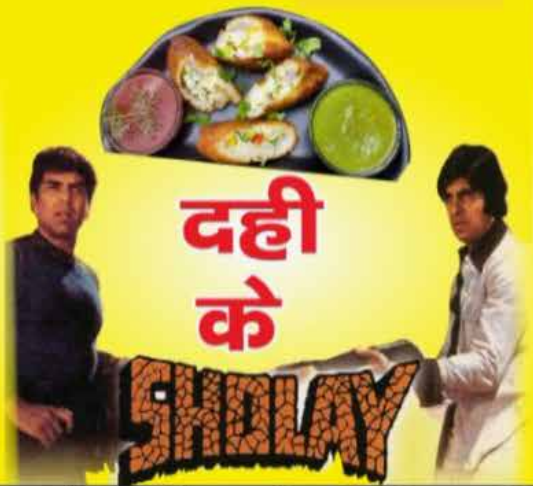

चना सूप 30/-

वैज सूप 50/-

स्थाई स्टाल - सेक्टर 17 मार्किट थानेसर / सेक्टर 13 मार्किट थानेसर

सम्पादकीय

यश पाल कन्चन

एडिटर इन चीफ

जैसे तैसे करके साल 2021 भी विदा हो गया। लेकिन जाते जाते नए साल 2022 के लिए नई चुनौतियां छोड़ गया। चुनौती होगी सरकार देश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाए और नए खतरे ओमिक्रोन से निपटने की। यहां पर आपको और हमें सभी को इस नए खतरे के लिए तैयार रहना पड़ेगा सबको सुनिश्चित करना होगा कि सब कोविड-19 गाइडलाइन का पालन करें ताकि फिर से देश को लॉकडाउन ना झेलना पड़े। अमूमन लोग कोरोना को हल्के में लेने लगे हैं लेकिन खतरा इस बार बढ़ रहा है बड़ा भी है।

सरकार ने बेटियों की शादी की उम्र 21 साल की है इसके भले ही कुछ फायदे सरकार देख रही हो लेकिन सामाजिक तौर पर कुछ नुकसान निसंदेह होंगे। भागमभाग की जिंदगी में कहीं ना कहीं बेटियां कम पिसेगी लेकिन उनसे ज्यादा कहीं ना कहीं उनके मां-बाप पिसने वाले हैं। डर है कहि सामाजिक ताना-बाना ना बिगड़ जाए लेकिन सरकार की मंशा पर सवाल भी नहीं उठाया जा सकता लेकिन बीच का रास्ता निकाला जा सकता हैं। यह फैसला उस वक्त आया है जब 20 साल बाद हरनाज संधू मिस यूनिवर्स बनी है।

हमारे मीडिया के साथियों के लिए भी नव वर्ष नई उम्मीद लेकर आएगा नई ऊर्जा के साथ समाज के लिए सकारात्मक करने का मौका देगा। गोदी मीडिया जैसे शब्दों को पीछे छोड़ हमें नित नए प्रयोग करने होगे। यह आप और हम पर है कि हम किस तरह से समाज को फायदा पहुंचा सकते हैं। नव वर्ष 2022 उमंग और उल्लास से भरा रहे। पूरी ताकत के साथ फिर से खड़े हो चहचहाती चिड़ियों और आसमान में उड़ते परिंदों की तरह फिर से हिलोरे भरें और मानव जीवन को सार्थक करने वाले प्रयास करते रहे। अंत मे फिर से कन्चन वर्ल्ड ग्रुप की ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं आप सभी को नववर्ष 2022 की ढेरो बधाई।|

+91-9215560025 kanchanworld0025@gmail.com www.kanchanworld.com

समाचारों के चयन व प्रकाशन के लिए उत्तरदाई सर्वाधिकार संपादक के पास सुरक्षित हैं। दिए गए लेखो व अन्य सामग्री के लिए संपादकीय विभाग जिम्मेदार नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद की दशा में न्याय क्षेत्र जींद ही होगा।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक यशपाल कंचन द्वारा सतीश प्रिंटिंग प्रेस जींद (हरियाणा) से प्रकाशित।

मुख्य ऑफिस	मार्केटिंग ऑफिस	कॉर्पोरेट ऑफिस	ब्रांच ऑफिस	क्रिएटिव ऑफिस
असन्ध रोड सफीदों 126112 हरियाणा (भारत)	सेक्टर 17 चंडीगढ़ 160017 भारत	पालम विहार नई दिल्ली 110045 भारत	आईटीआई चोंक जीटी रोड करनाल 132001 हरियाणा (भारत)	सेक्टर-5 कुरुक्षेत्र 136118 हरियाणा (भारत)

वोकल फॉर लोकल बन रहा जन-जन की आवाज

कोविड काल में प्रधानमंत्री ने भारतीय उत्पादों को बढ़ावा देने और स्वदेशी वस्तुओं का इस्तेमाल करने की अपील की थी और वोकल फॉर लोकल का नारा दिया था, साथ ही प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर भारत अभियान भी शुरू किया था। इन दोनों अभियानों का अब देश में व्यापक असर दिख रहा है। तमाम मंत्रालयों में भी अब भारतीय कंपनियों को प्राथमिकता दी जा रही है। स्वदेशी रक्षा उपकरणों समेत विभिन्न क्षेत्रों में स्वदेशी उत्पादों को वरीयता दी जा रही है। हाल ही में त्योहारों के मौसम में भी लोगों ने पूरी तरह से स्वदेशी सामानों को प्राथमिकता दी है। इस दीपावली के त्यौहार में वोकल फॉर लोकल देश में जन-जन की आवाज बना। आत्मनिर्भर भारत की मुहिम से स्थानीय उत्पाद अब वैश्विक बन रहे हैं। 'स्वदेशी संग उत्सव' जनसेवा अब देश सेवा का जरिया बन रही है। इस दीवाली में लोगों ने बाजारों में खरीदारी करते वक्त स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता और तवज्जो दी। आज स्थानीय उत्पाद देश में सबकी पहली पसंद बन गए हैं। इस त्योहारी सीजन में देशभर के बाजारों में ग्राहकों की संख्या में बढ़ोत्तरी आई, जिससे व्यापारी वर्ग की बड़े लाभ की उम्मीद पूरी हुई। कनफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स यानी कैट को उम्मीद थी कि इस बार दीवाली के त्यौहार के दौरान उपभोक्ताओं द्वारा की गई खरीदारी के खर्च के माध्यम से अर्थव्यवस्था में लगभग दो लाख करोड़ रुपए की पूंजी का प्रवाह होगा। कैट ने लोगों से चीनी सामानों के बहिष्कार का आवाहन किया था और उसके बाद देश के व्यापारियों एवं आयातकों ने चीन से आयात बंद कर दिया, जिसके कारण इस दीवाली के त्यौहारी सीजन में चीन को करीब 50 हजार करोड़ रुपए का व्यापारिक घाटा हुआ है।

देश भर के गांव और शहरों में रहने वाले लोकल कारीगरों द्वारा बनाए गए सामान की बिक्री के लिए उन्हें बाजार उपलब्ध कराया गया। सभी राज्यों में कैट की संस्थाओं का तालमेल ऐसे छोटे-छोटे कारीगरों से बना था, जिनके पास कला तो है लेकिन बाजार नहीं था। हाल ही में विभिन्न राज्यों के 20 शहरों में किए गए एक सर्वेक्षण में यह तथ्य सामने आया कि इस वर्ष अभी तक भारतीय व्यापारियों या आयतकों द्वारा दीवाली के सामान, पटाखों आदि का कोई आर्डर चीन को नहीं दिया गया था। हिंदुस्तान से दीवाली का जो व्यापार चाइना करता था, उसकी अब बहुत बड़ी चोट चाइना को लगी है।

देश में एक महत्वपूर्ण बदलाव यह आया है कि पिछले साल से उपभोक्ता भी चीनी सामान खरीदने में दिलचस्पी नहीं ले रहे, जिसके कारण भारतीय सामान की मांग बढ़ने की पूरी संभावना रही। कैट के मुताबिक इस वर्ष राखी उत्सव के दौरान चीन को लगभग 5 हजार करोड़ रुपए का भारी नुकसान हुआ, गणेश चतुर्थी में 5 सौ करोड़ रुपए का नुकसान हुआ और अब यही प्रवृत्ति दीवाली के उत्सव में देखने को मिली। कैट इसे मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में, व्यापारिक समुदाय की ओर से, एक मजबूत और ठोस योगदान के रूप में देख रहा है। इस बार दीपावली में मिट्टी के दीयों की बिक्री ज्यादा हुई। स्वदेशी उत्पादों की बिक्री से लोकल फॉर वोकल को प्रोत्साहन मिल रहा है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान ना केवल आर्थिक अभियान है, बल्कि सामाजिक बदलाव का भी सबसे बड़ा अभियान है। इस अभियान से न केवल देश की अर्थव्यवस्था सुधरेगी, बल्कि दुनिया में भारत एक निर्यातक देश के तौर पर उभरेगा। वोकल फॉर लोकल के कई महत्वपूर्ण फायदे हैं, छोटे-मझोले स्वदेशी उद्योगों की कमाई बढ़ेगी, स्वदेशी कारीगरों को बढ़ावा मिलेगा और ज्यादा कमाई होगी। स्वरोजगार बढ़ेगा, रोजगार के नए मौके बनेंगे, ग्रामीण भारत और छोटे शहरों से पलायन रुकेगा। भारत आयातक के बजाय निर्यातक देश बनेगा। भारत के परंपरागत उत्पाद बड़े ब्रांड बन सकेंगे। देश की अर्थव्यवस्था में लगातार सुधार होगा, 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने में मददगार साबित होगा। कृषि और उससे जुड़े कारोबार में तेजी आएगी। भारत आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनेगा। दरअसल

त्योहारों के दौरान भारत में अरबों का व्यापार होता है और भारत त्योहारों का देश है। अगर हम लगातार वोकल फॉर लोकल के लिए सब को प्रेरित करेंगे तो ये तय है कि भारत के लिए आत्मनिर्भर बनना मुश्किल नहीं होगा, क्योंकि यहां जनसंख्या 130 करोड़ से ज्यादा है और भारतीय अर्थव्यवस्था खपत आधारित है।

इस बार भारत की दीपावली खास रही, क्योंकि इस बार लोगों के घरों में चीनी लाइट्स नहीं जलीं, बल्कि हर घर भारत में बने मिट्टी के दीयों से रोशन हुआ। इस तरह उन कारीगरों के घरों में भी रोशनी हुई, जो मेहनत करके देश में ही मिट्टी से बर्तन बनाते हैं, दिए बनाते हैं, भगवान की मूर्तियां व अन्य सामान बनाते हैं।

वोकल फॉर लोकल की मदद से लोगों को अपना व्यापार शुरू करने के लिए सरकार की ओर से प्रोत्साहित किया जा रहा है और देश के लोगों को देश के उत्पादों को खरीदने के लिए भी प्रेरित किया जा रहा है। इस मुहिम की वजह से बेरोजगारी की समस्या भी काफी हद तक दूर होगी और ये कदम देश में नौकरियों की कमी को पूरा करेगा। दरअसल भारत देश अन्य देशों पर काफी निर्भर करता है, जिसकी वजह से अन्य देशों की कंपनियां भारत में व्यापार करके खूब धन कमा रही हैं। ऐसा होने से इन देशों की अर्थव्यवस्था को ही मजबूती मिल रही है। सरकार का उद्देश्य है कि इन देशों की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की बजाय अपने देश में ही उत्पादन किया जाए, ताकि हमारे देश की जनता स्वदेशी सामान खरीद सके। कोरोना काल के दौरान देश को लोकल बनने का सबक मिला है। दरअसल कोरोना के वक्त भारत को पीपीई टेस्टिंग किट व अन्य चीजों के लिए दूसरे देशों पर निर्भर होना पड़ रहा था। वहीं चीन से जो पीपीई टेस्टिंग किट भारत की ओर से खरीदे गए थे, वो सही नहीं थे। कोरोना के दौरान लोकल उत्पादन की अहमियत समझ में आई और सरकार ने देश को लोकल फॉर वोकल बनाने की तरफ एक कदम उठाया। भारत सरकार का लक्ष्य है कि वह लोकल प्रोडक्ट और लोकल सप्लाई चैन को देश में मजबूत करे। ऐसा करने से लोकल प्रोडक्ट को बढ़ावा मिलेगा और लोकल अर्थव्यवस्था भी बढ़ेगी। वहीं लोकल से ग्लोबल बनने का सपना आसानी से पूरा हो जाएगा। कोरोना संकट के दौरान ये बात सामने आई है कि लोकल प्रोडक्ट और लोकल सप्लाई चैन देश के लिए कितनी जरूरी हैं। इसलिए अब हमें लोकल प्रोडक्ट को बढ़ावा देना है, लोकल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना है और अब हर भारतवासी को लोकल के लिए वोकल बनना है। न केवल लोकल प्रोडक्ट खरीदना है, बल्कि उनका प्रचार भी करना है। लोकल से वोकल बनने के लिए भारत सरकार ने जरूरी कदम उठाए हैं और अब देश में ही पीपीई किट, टेस्टिंग किट एवं दवाइयां बनाई जा रही हैं। कोरोना काल के दौरान कई सारी भारतीय कंपनियां आगे आईं और इन उत्पादों को बनाया गया। ऐसा करने से इस पूरे दौर में लोगों को रोजगार मिल सका और साथ ही देश ने आत्मनिर्भरता की ओर कदम भी बढ़ाया। प्रधानमंत्री के इस नारे की वजह से ही अब देश के लोग चीन के उत्पादों को खरीदने से बच रहे हैं और केवल उन्हीं उत्पादों को खरीद रहे हैं जो केवल देश के द्वारा बनाए गए हैं। इतना ही नहीं देश के करोड़ों लोगों को व्यापार शुरू करने के लिए प्रोत्साहित भी किया गया है। भारत के कई सारे ऐसे बाजार हैं जहां पर केवल विदेशी कंपनियों का ही दबदबा है। इसलिए अब वह समय आ गया है कि देश वोकल फॉर लोकल बने और विदेशी कंपनियों के कब्जे को भारत के हर बाजार से हटाया जाए।

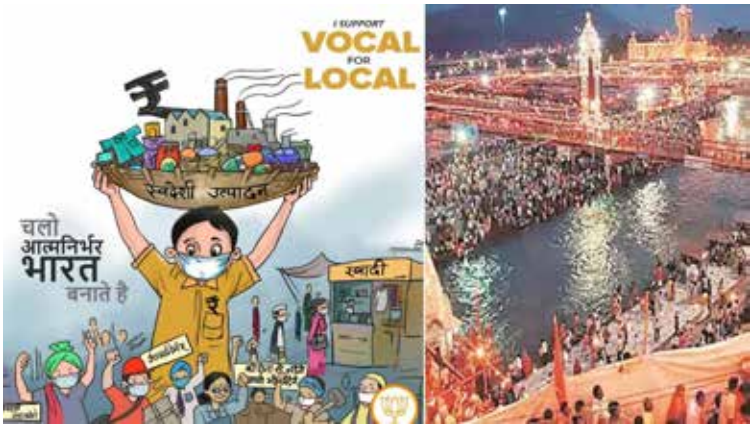

देश के लोगों को यह जानकर हैरानी होगी कि बिस्किट, चॉकलेट, पानी, चिप्स जैसी मार्केट पर केवल विदेशी कंपनियों का ही कब्जा है। वोकल फॉर लोकल की प्रधानमंत्री ने जो अपील की थी, वो अब जन आंदोलन बनती नजर आ रही है। प्रधानमंत्री की इस अपील पर साधु-संतों के जुड़ने से इसके सामाजिक असर को और तेजी से बढ़ता देखा जा सकता है। प्रधानमंत्री ने साधु-संतों और आचार्यों से अपील की थी कि जिस तरह देश के स्वाधीनता संग्राम में भक्ति आंदोलन ने भूमिका निभाई थी, उसी तरह अब देश को उनकी मदद की आवश्यकता है। वो देश की किसी भी कोने में धार्मिक और आध्यात्मिक प्रवचन दें, उसमें वोकल फॉर लोकल के संदेश को निरंतर स्थान दें। प्रधानमंत्री की इस अपील का साधु-संतों और आध्यात्मिक गुरुओं पर काफी असर पड़ा है और उन्होंने इसे काफी प्रोत्साहित भी किया है।

रंजना मिश्रा
कानपुर, उत्तर प्रदेश

पारंपरिक दोगलों का नारको टेस्ट

{व्यंग्य कविता}

न जाने हम कैसी मान्यताओं में पलें हैं
चिरकाल से चले आ रहे पारंपरिक दोगले हैं
हम मानते कुछ हैं ठानते कुछ हैं
कहावतों की छलनी में छानते कुछ हैं
बच्चा हुआ तो कहते हैं घर में नया मेहमान आने वाला है
अब वो मेहमान कैसे हुआ जो नौ महीने पेट में पाला है
मेह्मान तो वो होता है जो कुछ समय रहकर चला जाए
अब आपका बच्चा तो जनाब आपके साथ ही रहने वाला है
अब लड़की हुई तो घर में लक्ष्मी आई है
क्यूँ भाई दुर्गा, सरस्वती, काली माँ क्यूँ नहीं जाई है
वह लड़की घर की लक्ष्मी भी है और बोझ बाप के कन्धों का
लड़की तो परायी होती हैं कहना उपहास है संबंधों का
क्या विवाह के बाद लड़की बेटी या बहन नहीं रहती
क्या नदी सागर में मिलने पर गाँव गाँव नहीं बहती
उत्तर की माँ कहे बेटी नहीं ब्याहुंगी इतनी दूर दक्षिण में
और परदेश से रिश्ता आ जाए तो हामी भरती है क्षण में
आपकी चाह होती है पैसा, गाडी, बड़ा घर
और हर तरह की सुरक्षा का किला
और फिर आप कहते हो कि आपको 'प्यार' नहीं मिला
शादी कर लो नहीं तो बुढापे में तुम्हारा कौन ख्याल रखेगा
पहली बात तो ये कि छड़ो को बुढापा कहाँ आता है
जाको राखे साइयाँ उनको शादी सियापा कहाँ भाता है
और दूसरा तथ्य
क्या लड़कियां की वृद्धवस्था नहीं होती हैं?
क्या उनकी उम्र व्यवस्था नहीं खोती है?
यहाँ अजनबियों से बात नहीं करते हैं लेकिन विवाह कर लेते हैं
समाज परिवार मान्यताओं के नाम पर जीवन निबाह कर लेते हैं
लड़कियों की तारीफ़ करनी है तो वे 'मर्दानी' क्यूँ कहलाये
अमृत है वह तो महज़ पानी क्यूँ कहलाये
फलां औरत 'गॉड फियरिंग' याने भगवान से डरने वाली है
डर भगवान से क्यूँ ...तो क्या वह शैतान को वरने वाली है
स्वयं जाइए थाईलैंड हे पुरुषोत्तमो बजाइए हर गली में बैंड
लेकिन घर लाने को चरित्रवान छोकरी सबको चाहिए
सरकारी बस नहीं, सरकारी अस्पताल नहीं, सरकारी स्कूल नहीं
लेकिन सरकारी नौकरी सबको चाहिए
इस महान देश में एक भाषाई विशेषता पायी जाती है
यहाँ शुद्ध हिंदी लोगों को हंसाने को प्रयोग में लायी जाती है
अजीब विडंबना देखिये यहाँ धर्म के नाम पर वे लोग दंगे फैलाते हैं
जिन्होंने किसी भी धर्म ग्रन्थ की एक भी पंक्ति नहीं पढ़ी और वे हमें जिंदा जलाते हैं
यहाँ साईं को मंदिरों में बिठाने पर विवाद हो सकता है
लेकिन रजनीकांत के मंदिर बनाये जा सकते हैं
यहाँ जिन्दा सजीव फूल निर्जीव मूर्तियों पर चढाये जा सकते हैं
यहाँ बड़े लोगों की निशानी ये होती है कि उन्हें लुप्त होते टाइगर की चिंता बहुत होती है
और जब वे अपनी गली के भूखे नीरीह कुत्तों को भगा के मारते हैं तो ये आँखें बहुत रोती हैं
यहाँ समय किसी के पास नहीं और हर आदमी टाइम पास कर रहा है
उन बेहोश लोगों को पता ही नहीं चलता कि एक दिन समय उन्हें पास करके चला गया

डॉक्टर भगवान् का रूप होते हैं लेकिन अधिकतर ठगवान के हाथो मानव छला गया

सार्वजनिक आलिंगन से हमारी संस्कृति आहत हो जाती है

लेकिन कहीं भी मुफ़्तदान से विरासत में राहत हो जाती है

हमारे महान वैज्ञानिकों की महान सोच से हम मंगल तक चले गये

यहाँ धरती पर इन मंगलाओं की शौच के लिए भी जरा सोचिये ना

छोटी सुविधाओं का कोड वाला कोई स्क्रैच कार्ड खरोचिये ना

सच हम कुछ भी कहते हैं हमारी बातें हैं कितनी झूठी

जैसे फलां आदमी ने फलां लड़की की जानवरों की तरह अस्मत लूटी

क्या आपने कभी किसी जानवर को रेप करते देखा है

जानवरों में फिर भी कहीं मर्यादाओं की रेखा है ।

सुनील साहिल
कवि, व्यंग्यकार, हास्य कवि
पुणे

लिखना कठिन है"

(महिलाओं के सँघर्ष को समर्पित)

लिखना कठिन है उस व्यक्तित्व के लिए

जो खुदकी मेहनत से ज़माने को जीत,

मन्द-मन्द मुस्कुराती है

समझता है ज़माना जिसे कमजोरी उसकी,

उसे ही वह अपनी ढाल बनाकर आगे बढ़ती जाती है.....

समय- समय पर दुविधाएं घेरे में जब उसे ले आती है,

चक्रव्यूह को तोड़कर फिर वह आगे बढ़ती जाती है

मिला धोखा-दगा जमाने से उसे फिर भी वह खुद को समझाती है

मेहनत करती है चुप्पी साधकर,

उचाईयों की ओर बढ़ती जाती है,

मददगार रवैया रखकर सबको अपने-सा समझ जाती है,

ज़माने के दस्तूर को ना समझ कर खुद ज़माना बन जाती है,

लिखना कठिन है उस व्यक्तित्व के लिए

जो खुदकी मेहनत से ज़माने को जीत,

मन्द-मन्द मुस्कुराती है

समझता है ज़माना जिसे कमजोरी उसकी,

उसे ही वह अपनी ढाल बनाकर आगे बढ़ती जाती है.....

डॉ तनुज गोयल टोहाना
(मानद डॉक्टरेट बेल्जियम, संस्थापक फ्रेंडस टू हेल्प संस्था,
यूएन वी अवार्डी-2021,
राज्यपाल अवार्डी रोवर हरियाणा

तुम्हारे बिना अधूरा हूँ मैं.....

"तलाक केस के नियमानुसार आप दोनों को सलाह दी जाती हैं कि एक बार काउंसलर से मिलकर आपसी मतभेद मिटाने की कोशिश करें।" तलाक केस की सुनवाई करते हुए जज ने कहा।

अगले ही मंगलवार सुषमा और अजीत दोनों काउंसलिंग सेंटर पर जाते है। सुषमा के साथ उसके भैया-भाभी तो अजीत के साथ उसके कुछ दोस्त थे। काउंसलर ने सिर्फ सुषमा और अजीत को अंदर आने को कहा। अंदर आते ही काउंसलर ने पूछा - "आप दोनों अपनी मर्जी से तलाक चाहते है या किसी के बहकावे / दबाव में आकर।" दोनों को चुप देखकर काउंसलर ने कहा, "यही टेबल पर बैठकर थोड़ी देर आपस में बात कर लीजिएं आप दोनों"।

टेबल पर बरकरार चुप्पी को तोड़ते हुए अजीत ने पूछा - "कैसी हो, सुषमा ?"

"ठीक हूँ, आप कैसे हो? खाना और दवा इत्यादि टाइम पर खाते हो न, आपका हेल्थ डाउन दिख रहा ?"

"हाँ, तुम्हारे नाराज होकर जाने के बाद ज़िम्मेदारी एवं तनाव दोनों बढ़ गया। आज भी बहुत मिस करता हूं तुम्हें।"

"मैं भी आपको बहुत मिस करती हूं, पर..... ।"

"पर क्या, सुषमा ?" अजीत ने सुषमा के हाथों पर हाथ रखते हुए पूछा।

"अजीत, मैं अपने घर की सबसे छोटी बेटी हूं सभी ने मुझे काफी लाड़-प्यार दिया है। कभी किसी चीज कमी नहीं रही मुझे।"

"हाँ, तो फिर सुषमा ……..!"

"छोटे के कस्बे में रहने और साँस-ननद के रोका-टोकी के साथ इतनी जिम्मेदारी मेरे से नहीं हो पाती। फ्री लाइफ जीना पसंद किया है मैंने हमेशा।"

"इसमें क्या सुषमा !, तुम्हारे साथ मैं हूँ न, कुछ दिन एडजस्ट कर लेती, धीरे-धीरे तुम उन्हें समझती और वह लोग तुम्हें।"

"पर अजीत, मैने तुमसे शादी की है, तुम्हारे साथ रहना पसंद करूंगी।"

"ठीक है सुषमा, मैं भी तुम्हें अपने साथ रखना चाहता हूं और रही बात छोटे के कस्बे में रहने की तो वहाँ तुम्हें रहना ही कितने दिन था, मेरे छुट्टियों के दिन में मेरे साथ या फिर कभी-कभार किसी जरूरत पर कुछ दिन या माह मेरे बिना। बाकी समय मेरे साथ रहना था तुम्हें।"

"फिर भी अजीत.....!"

"फिर भी क्या,तुम्हारे मन में कोई बात थी तो मुझसे कहती, नाराज होकर तुम्हारा मायके चले आना कितना सही है, सुषमा?"

"मैंने आपको कॉल किया था बताने के लिए । लेकिन आप ना मुझे समझ पाए, ना मेरी इच्छाओं को"

"सुषमा उस दिन मैं मीटिंग था। कांफ्रेंस रूम में होने के बावजूद मैंने तुमसे बात की । सोचा शाम को घर पहुंच शांति से दुबारा बात करूंगा तुमसे । शाम को कई बार तुम्हें फ़ोन किया पर लगा नहीं । माँ से पूछा तब पता चला तुम भैया के साथ मायके चली आई। कई बार मैने तुमसे बात करने की कोशिश किया। तुम्हारे भैया-भाभी को भी फ़ोन किया था मैने l तब जाकर पता चला तुम मुझसे बात नहीं करना चाहती।" अपनी बात आगे कहते हुए अजीत ने कहा- "तुम्हें मनाकर वापस ले आने के लिए मैंने अगले महीने सहारनपुर आने का भी प्लान किया था। लेकिन उसके पहले नोटिस मिल गई मुझे तलाक की।"

" पर अजीत, ……..!"

"पर क्या सुषमा, तुम बात करने को तैयार नहीं थी, बिना बात किए हमारे बीच नाराजगी कैसे ख़त्म होती ? कैसे भूल गई तुम ?...पहली बार जब सहारनपुर में तुमसे मिला था और कुछ पल के मुलाकात में तुम्हारे हाथ को पकड़ते हुए मैने कहा था कि ये हाथ पकड़ रहा हूं मेरे आखिरी सांस तक छूटने मत देना अपने हाथों को, हमेशा मेरे साथ रहना। आज उसके कुछ ही महीने में हमारा रिश्ता टूटने के कगार पर आ गया?"

"मैं भी आपको छोड़ना नहीं चाहती हूं, पर शादी के बाद मुझे बहुत सी चीजें पसंद नहीं आई। जैसे तुम्हारे बिना कस्बों की लाइफ इत्यादि।"

"जो चीजें पसंद नहीं आई उस पर हम दोनों बात करते तो उसका

कोई न कोई हल जरूर निकल आता। रिश्ते बरक़रार रखने के लिए कुछ तुम कहती कुछ मैं....हम दोनों समझते एक दूसरे को ....! आखिर मेरे विश्वास पर तुम अपना घर परिवार छोड़ यहाँ आई थी। जो समस्याएं थी उस पर बात करते हम दोनों बड़े बुजुर्गों ने भी कहा है कि बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान आपसी संवाद से निकल आता है। बातचीत बंद न होने के कारण आज हमारे रिश्ते खत्म करने के कगार पर आ गए।" दुखी स्वर में अजीत ने अपनी बात खत्म की।

"मैने आपसे शादी किया है आपके साथ रहने के लिए। आपके मम्मी पापा चाहे तो हमारे साथ आकर रह सकते हैं चंडीगढ़ में ।"

"क्या लगता है तुम्हें सुषमा, मुझे तुम्हारे बिना अच्छा लगता है? टिकट तुम्हारा भी कराया था मैंने साथ आने के लिए लेकिन अचानक से मम्मी की तबीयत खराब होने के कारण मुझे अकेले आना पड़ा। मेरी पत्नी होने के साथ-साथ तुम उनकी बहू भी हो। जरूरत के वक्त दोनों को दोनों के परिवार को अपना मानकर उनके साथ होना जरुरी हैं। मम्मी के डॉक्टर खुराना से मेरी बात हुई हैं । डॉक्टर साहब बोल रहे थे कि एक से दो महीने के अंदर मम्मी चलने फिरने लायक हो जायेंगी।"

"ये तो बहुत अच्छी खबर है अजीत, चिंता मत करो आप भगवान जल्दी ठीक कर देंगे मम्मी जी को। वैसे आगे क्या करने सोचा है आपने।"

"सोचना क्या सुषमा, मैंने तुमसे प्यार किया है। मैं तुम्हें पसंद करता हूँ ये बात घर पर बताकर सबको राजी किया था मैंने शादी के लिए। बस दुःख इतना है कि ये रिश्ता मैं बचा नहीं पाया।" - अजीत ने अपनी बात को विराम देते हुए कहा।

"इतना होने पर भी आज क्या आप मुझसे उतना ही प्यार करते हो ?" - सुषमा ने पूछा ।

" हां सुषमा, भले ही कल हमारे रिश्ते नहीं रहेंगे पर तुम्हारे साथ बिताए हर एक पल का अहसास मेरे साथ रहेंगे ।"

"अच्छा ठीक है, चलो अब मैं चलती हूँ। भैया-भाभी इंतजार कर रहे होंगे, लेट हो रहा मुझे अब।"

"ओके सुषमा अपना ख्याल रखना ! सोचा था बात करके सब ठीक कर लूंगा। पर कोई बात नहीं, कोर्ट के अगली तारीख को कोर्ट नहीं आऊंगा मैं । डाक से भिजवा देना पेपर मैं साइन कर दूंगा तलाक के पेपर पर।"

"ओके मत आना ! आपको आने की जरूरत भी नहीं हैं लेकिन हो सके तो सहारनपुर आ जाना मुझे ले जाने के लिए। "

"क्या ....क्या.... क्या कहा तुमने सुषमा ? " अजीत ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।"

"वही जो आपने सुना, मैं भी आपके फोन को नजरअंदाज न करती तो ये मसला आपसी सहमति से कब का सुलझ गया होता। रिश्ते बचाने के लिए मैंने भी समय नहीं दिया और लोगों के बहकावे (रोका-टोकी) में आकर रिश्ता तोड़ने की सोच ली।"

"वही सुषमा, ब्याह कर तुम्हें मैं लाया हूं। तुम्हें खुश रखने की जिम्मेदारी मेरी है। लेकिन उन जिम्मेदारियों के साथ हमें इस जीवन के सफर में अनेक जिम्मेदारियों का रोल अदा करना होता है और इसमें हमें एक दूसरे का पूरक बनना होगा। वादा करो आगे फिर कभी जीवन के इस सफर में लड़खड़ाई तो मुझे अकेला छोड़कर वापस नहीं जाओगी बल्कि एक आवाज देकर मेरा हाथ थामकर साथ चलोगी।"

"ठीक है बाबा, अब वादा करती हूं मैं, कभी नाराज होकर नहीं जाऊंगी। तुम भी अब थोड़ा सा स्माइल दें दो।" - सुषमा ने कहा ।

इतने में अजीत सुषमा को गले लगाते हुए बोल पड़ा, "पगली कभी छोड़ के मत जाना। तुम मेरी अर्धांगिनी (आधा अंग) हो और तुम्हारे बिना अधूरा हूं मैं। आई लव यू सोना, बाबू.....।"

अंकुर सिंह
जौनपुर, उत्तरप्रदेश

बीते 18 महीनों ने बहुत कुछ सिखाया है

बीते 18 महीनों में हमने मानसिक तनाव बहुत झेला है । यह मानसिक कष्ट कई कारणों से रहा जिसमें प्रमुख रहा चीन पाकिस्तान के साथ युद्ध का भय व कोरोना महामारी । परन्तु हम सभी यह भी जानते हैं कि हमारी सरकार ने चीन व पाकिस्तान दोनों पर अपना दबदबा बनाये रखा और कोरोना महामारी पर बहुत हद तक काबू भी पाने में सफल रही । लेकिन इन सभी के बीच बीते 18 महीने हम सभी को बहुत कुछ सिखा के भी गया है और उस शिक्षा नें हमारी सोच व कार्य पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन कर दिया है । अब हम उस पर ही यहाँ संक्षेप में चर्चा करते हैं -

1) कोरोना के चलते जो पूर्णबन्दी (लॉकडाउन) लगा, उसमे सीमित संसाधनों में भी कैसे जी सकते हैं,सिखा दिया ।

2) पूर्णबन्दी (लॉकडाउन) के दरमियान हम घर की चार दीवारी में रहने के लिए आवश्यक संयम का महत्व सीख गये ।

3) इन बीते 18 महीनों में हमने न केवल अपने माँ-बाप बल्कि बच्चों को भी पूरा पूरा समय दे पाये। इसके अलावा उन सब की आवश्यकताओं का सही आँकलन भी कर पाये ।

4) इसी तरह इसी बीते 18 महीनों ने हमें स्वयं का काम स्वयं करना चाहिये ,के महत्व को बतला दिया |

5) सच में देखा जाए तो देश में हमारे आस-पास स्वच्छता - सफाई , जिसका सरकार पीछे कई वर्षों से अभियान चलाये हुए थी उसका सही अर्थों में महत्व इस बीते 18 महीनों ने हमें सिखा दिया |

6) हम सभी बिना बाल कटाए, दाढ़ी बनवाये, रूप- सज्जा (मेकअप) के बिना यानि बिना नाई के पास (सैलून) गए भी रह सकते हैं इसकी पुष्टि भी इन्ही 18 महीनों के दौरान देखने को मिल ही गयी|

7) वैसे तो हम सभी जानते ही हैं की सावधानी रखना कितनी जरूरी है लेकिन "सावधानी हटी और दुर्घटना घटी" का महत्व इन्ही बीते 18 महीनों में बखूबी समझ में आ गया |

8) इसी तरह एक दूसरे की मदद करना भी हमें बचपन से सिखाया गया है लेकिन इसका महत्व भी बहुत ही बढ़िया ढ़ंग से हमें इन्ही बीते 18 महीनों में एक नए तरीके से सीखने को मिला है |

9) अन्न की कीमत क्या होती है इसका अनुभव भी हर स्तर के लोगों को देखने मिला है |

10) मानसिक संतुलन की आवश्यकता क्यों और इसे कैसे बनाये रखना है इसको भी हमने अच्छी तरह से सीखा है |

11) इन्ही बीते 18 महीनों मे हमने यह भी सीखा है कि घर के काम में सभी हाथ बंटाते हैं तो कितनी आसानी से सारे गृहकार्य निपट जाते हैं यानि ये बीते 18 महीने घर के काम में हाथ बंटाना भी सीखा गया |

12) प्रकृति को सहेजना चाहिये यह तो सभी जानते हैं लेकिन उसके प्रभाव का प्रत्यक्ष अनुभव भी इन्ही बीते 18 महीनों में हुआ है |

13) इन्ही बीते 18 महीनों मेंअमीरी-गरीबी का भेद जिस तरह से मिटा है यानि प्रकृति ने किसी से भेदभाव नहीं किया,वह भी एक अलग तरह का अनुभव हुआ है |

14) इन्ही बीते 18 महीनों ने यह भी अनुभव करा दिया कि सीमित लोगों के साथ कम खर्च में शादी सम्पन्न की जा सकती है |

15) इन्ही बीते 18 महीनों ने अंतिम संस्कार की पद्धति ही बदल कर रख दी जिससे यह स्पष्ट हो गया कि कम लोगों की उपस्थिति में भी अंतिम संस्कार हो सकता है |

16) किसी भी बीमारी से पार पाने में मानसिकता का अलग महत्व है | यही बात यानि आनेवाली किसी भी तरह की विपदा को मजबूती से निपटाने की मानसिक तैयारी कैसी हो यही हमें इन्ही बीते 18 महीनों में सीखने को मिला है |

17) हम सभी प्रायः नित्य ही अपने अपने पूजा स्थल जाते ही रहे हैं। लेकिन कोरोना काल में पूजा स्थल बन्द हो जाने से इन्ही बीते 18 महीनों वाले समय ने उस सर्वशक्तिमान प्रभु का घर पर ही दर्शन, अर्चना करना सिखा दिया |

18) जो लोग समय अभाव के कारण पूजा अर्चना कर नहीं पाते थे उन्हें आध्यात्मिक चिंतन करना इन्ही बीते 18 महीनों में सीखने मिला ।

19) साधारण समय में हम एकदम अकेले रह ही नहीं सकते । कम से कम दो जनें साथ रहते ही आये हैं। लेकिन इस बीते 18 महीनों में हम लोगों में से अनेक लोगों ने एक नया नया अनुभव किया जिसमें कोरोना संक्रमित सम्भावित व्यक्ति अपने घर पर ही अपने

आप को दूसरे लोगों के संपर्क में आने से बचने के लिये किसी एक कमरे में सब तरह से एकदम अलग रहना भी सीख गया ।

20) इन्ही बीते 18 महीनों के दौरान पहले पहले तो न कोई किसी के यहाँ जाता और न कोई अपेक्षा रखता था। लेकिन जब सरकार ने कुछ ढील दी तब दोस्तों के साथ साथ रिश्तेदारों का कुशलक्षेम पूछने जाना आना शुरू किया। लेकिन तब से लेकर अभी तक सब समय यह ध्यान रखा जा रहा कि मास्क पहन, पूरी दो गज की दूरी से ही आदर-सत्कार वाली औपचारिकता निभायें ।

21) इन 18 माह में अभिवादन का तरीका भी हाथ मिलाने की जगह अब नमस्कार हो गया है। अतः दूर से ही आपस में नमस्ते कर औपचारिकता निभा रहे हैं ताकि सोशल डिस्टेंसिंग की पालना हो जाय । यहाँ एक तथ्य और बता दूँ की हमारी इस सनातन परम्परा को सारे विश्व ने भी अंगीकार कर लिया है ।

22) इन्ही बीते 18 महीनों में कोरोना के चलते शिक्षा संस्थान बन्द करने पड़े | उस समस्या से निपटने के लिये बीते महीनों वाले समय ने संचार संपर्क (ऑनलाइन) के माध्यम से पढाई की ब्यवस्था से उस पर पार पाना सिखाया |

23) हम संचार सपन्न अंकीय प्रणाली (डिजिटल) युग में रह रहे हैं लेकिन उसका सदुपयोग कर हम क्या क्या लाभ उठा सकते हैं, इस विषय को विस्तार से समझाया गया और लोगों ने उसका लाभ भी खूब उठाया |

24) समयाभाव के चलते या किसी भी कारण से जो लोग व्यायाम / योगाभ्यास नियमित नहीं करते थे, उन्हें इसका महत्व इन्ही बीते 18 महीनों में समझ में आ गया और तब से अब तक वो कर ही रहे हैं |

25) प्रायः आम लोग आयुर्वेदिक दवा को अहमियत नहीं देते थे लेकिन कोरोना के कारण इन्ही बीते 18 महीनों में केवल आम लोग ही नहीं बल्कि ऐलोपेथिक डॉक्टर भी आयुर्वेदिक काढ़ा सभी को नियमित सेवन की सलाह भी दी और स्वयं भी लेना शुरू किया यानि हमारे वैदिक काल वाली दवा कितनी कारगर है ,यह सभी ने माना |

26) बीते 18 महीनों ने हमें हर तरह की समस्या से संघर्ष करना भी सिखाया है |

27) कृपया ध्यान दे लें बीते 18 महीने जीवन का सही मूल्य समझा कर विदा हो गया है |

निष्कर्ष में यही बताना चाहता हूँ कि इन्ही बीते 18 महीनों ने हमारी सोच, व्यवहार , चिंतन को एक नयी अनूठी दिशा प्रदान की है | बीते साल ने हमे स्पष्टरूप से समझा दिया है कि सही सोच, हिम्मत और धैर्य से हम सभी प्रकार की मुसीबतों से राहत पा सकते हैं और इसी सोच अनुसार इसी साल 2021 में टीके के आ जाने पर यह सभी लाभर्थियों तक पहुँचाने में हम सभी अपने अपने स्तर अनुसार सरकार के साथ सहयोग कर अपनी सहभागिता निभा रहे हैं |

गोवर्धन दास बिन्नाणी "राजा बाबू"
बीकानेर राजस्थान

ग़ज़ल

इतनी बड़ी गलतफहमी कैसे पालते हो।
लतीफों के दौर में तुम सच तलाशते हो।

लिखने से पहले ही बिक जाते हैं अक्सर,
जिन अखबारों में तुम सच निहारते हो।

इंसानों को छोड़ कर मूर्तियां पूजते हैं लोग,
फिर खुद को छोड़ क्यों पत्थर तराशते हो।

कभी ख़ुलूस कभी साज़िश नज़र आती है।
अपना कह कर तुम जब भी पुकारते हो।

उतर जाता है हर रोज़ चेहरे से नया मखोटा,
ज़िस्म से जैसे कोई लिबास उतारते हो।

'साहिर' नादान है थोड़ा कच्चा है अभी,
और तुम उस जैसे न जाने कितने डकारते हो।

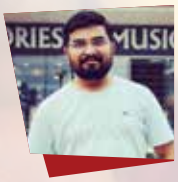

गौरव गर्ग
कवि, समाज सेवक, रक्त दाता
कुरुक्षेत्र

पुराना भारत (कहानी)

रामलाल को कारणवश सपरिवार सुदूर अपने रिश्तेदार के यहाँ जाना था । राह लगभग चार दिनों की थी । कुछ खाने के लिए रोटी कपड़े में बाँधी और अपनी पत्नी व दो छोटे-छोटे बच्चों के साथ पैदल यात्रा पर निकल पड़ा । यात्रा मार्ग जंगलों से होते हुए था बीच में छोटे-बड़े गाँव भी पड़ते थे उन्हें वो बखूबी जानता था क्योंकि ऐसी यात्रा वो पहले भी कर चुका था ।

यात्रा का तीसरा दिन, एक मंदिर में रात्रि विश्राम कर सुबह फिर आगे बढ़ लिए । अब तक साथ में लाई हुई रोटियाँ खत्म हो चुकी थी पर रास्ते में आने वाली बस्तियों से उनकी व्यवस्था हो जाती कोई परेशानी नहीं हो रही थी । पर आज संयोगवश राह भटकने के कारण कोई गाँव आ ही नहीं रहा था दिन (सूर्य) सिर पर आ गया था । बच्चे भूख से बिलबिलाने लगे । तब ही कुछ दूरी पर तीन चार झोपड़े दिखाई दिए । सोचा, चलो वहाँ कुछ खाने को मिल जाये । पर क्या देखते हैं कि चारों झोपड़ों में इंसान एक भी नहीं, साथ ही झोपड़े भी बिन तालों के, हाँ, झोपड़ों के आगे बाखड़ में लकड़ी की आगड़ अवश्य लगी हुई थी ।

पत्नी को रास्ते से ही एक झोपड़ी में चूल्हा नजर आया उसने अपने पति से कहा- देखिए चूल्हा तो है कहीं रोटियाँ भी हो, घुसकर देखते हैं यद्यपि मन नहीं मान रहा था पर बच्चों की दशा देखकर घुसना पड़ा ।

पत्नी ने देखा कि एक मटकी में पानी और औंधी खटोटी के नीचे चार रोटी और चिटनीनुमा कुछ रखा हुआ है । उन्होंने भगवान को हाथ जोड़े और दोनों बच्चों को रोटी-चटनी खाने को दी, रोटी पाकर बच्चों के चेहरे खिल गये । तब ही झोपड़ी का मालिक आ गया और राम-राम से अभिवादन कर पूछता है कौन हो भाई ? मैं आपको पहचाना नहीं !

रामलाल ने कहा- आप हमें कैसे पहचानोगे बाबा , हम तो दूर देश के राहगीर हैं । रास्ता भटक गये इधर आ गये देखा कि यहाँ कोई होगा तो हमें रास्ता भी बता देगा और कुछ खाने को भी मिल जायेगा पर यहाँ इंसान एक भी नहीं था । क्षमा करना आपकी रोटियों में से दो रोटी इन बच्चों को खाने को दे दी हमसे इनकी भूख देखी नहीं जा रही थी ।

ये आपने बहुत अच्छा किया ।

अब ऐसा करो ये बची हुई दो रोटी आप दोनों भी खा लों तब तक मैं और रोटी बना देता हूँ ।

नहीं, बाबा हम रोटी नहीं खायेंगे इन बची हुई रोटियों पर आपका हक है आप भी सुबह के भूखे होंगे रामलाल ने कहा ।

अरे, मैं भी खाऊँगा और आपको भी खानी है अभी और बनाता हूँ ।

ये सुनकर रामलाल की पत्नी बोली-

"बाबा, हम आपकी मटकी के चून को देख चुके हैं आप हमसे खाने की मत कहो, हम आगे कहीं खा लेंगे अब हमें आगे का रास्ता बता दो जिससे हम सही राह पकड़ लें और सांझ होने से पहले सुरक्षित स्थान पर पहुँच जायें ।"

पर अतिथि को भगवान समझने वाले संस्कार कैसे मानने वाले थे अंत में संस्कारों की जीत हुई पर रोटी रामलाल की पत्नी ने बनाई और सबने मिल बैठकर खाई ।

रोटी खाते हुए बाबा ने कहा- बेटी , बहुत वर्षों बाद स्वादिष्ट रोटी खाने को मिली है और देखा कि उस समय उनकी आँखें नम थी । हमारे लाख पूछने पर भी उसने अपने बारे में कुछ नहीं बताया ।

जब हम चलने लगे तो बाबा ने कहा- ठहरो , वो झोपड़ी से कपड़े की छोटी सी थैली निकाल कर लाया और उसने रामलाल की पत्नी व उन दोनों बच्चों को एक एक रुपया दिया, मना करने पर भी नहीं माना और फिर वो स्वयं दो तीन किलोमीटर पैदल चलकर सही रास्ते तक पहुँचाने आया। रामलाल के परिवार के सभी सदस्यों ने बाबा के पैर छुए पर रामलाल की पत्नी से बाबा ने पैर छूने को मना कर दिया और कहा आप भटके राहगीर नहीं थे मेरे अतिथि थे मेरे भगवान थे । अच्छी तरह जाना ये रास्ता उधर के लिये ही जाता है और सब राम राम से अभिवादन कर चल दिए ।

बहुत दूर निकलने के बाद जब रामलाल के परिवार ने पीछे मुड़ कर देखा तो बाबा अभी भी वहीं खड़े हुए थे...और उन्हें जाते हुए निहार रहे थे ...

व्यग्र पाण्डे (कहानीकार)
राजस्थान

खतरे में कौन... देश या राष्ट्र

भारत की वर्तमान आंतरिक स्थिती को देखते हुए यह प्रश्न काफी सामान्य प्रतीत होता है कि खतरे में कौन है देश या राष्ट्र? लिबरल व्यक्तियों, राजनीतिक संगठनों दवारा समय-समय पर इस विषय पर चर्चा की गई परंतु उनकी चर्चा से जनता को दिशा भ्रमित निर्देश दिए गए। जिससे भारत की जनता अपनी मूल राष्ट्रीयता और राष्ट्र भावना को भुला चुकी है।

देश भू-भाग का वह हिस्सा है जो सरकार द्वारा नियंत्रित किया जाता है। देश में सरकार प्रजातंत्र या राजतंत्र पद्धति द्वारा नागरिको की सुरक्षा और देश को चलाने का कार्य करती है। देश की सीमा की सुरक्षा का सारा कर्तव्य सैन्य बलों का होता है। लोकतांत्रिक पद्धति से सरकार का चयन देश के नागरिको द्वारा किया जाता है और सुविधाएं ना मिलने पर सरकार का विरोध करने का अधिकार भी जनता के पास है। वर्तमान विश्व की भयावह स्थिती को देखते हुए भारत देश की सीमाएं जितनी सुरक्षित है, उतनी इससे पहले कभी भी सुरक्षित नहीं थी। अत्याधुनिक हथियारों से लैस भारतीय सैनिक भारत की सीमा की सुरक्षा बखूबी कर रहे हैं। देश को खतरा देश के बाहरी विरोधी शक्तियां से होता है, जिनके विषैले आचरण को सैन्य बलों द्वारा कुचला जा सकता है और भारतीय सैनिक बलों ने हर युद्ध में देश की सुरक्षा का कर्तव्य बखूबी निभाया है।

वहीं दूसरी तरफ राष्ट्र किसी देश की आत्मा, समरसता का विचार, भाई चारे की मिसाल है। वसुधैव कुटुम्बकम् और सामाजिक समन्वय जैसे विचार राष्ट्र और राष्ट्रीयता की भावना से ही उत्पन्न होते हैं। राष्ट्र के तौर पर भारत शुरुआती दिनों से ही काफी कमजोर रहा, कई व्यक्तियों, संगठनों द्वारा निजी लाभ सिद्ध करने के लिए सामाजिक स्तर पर कई प्रकार के भेदभाव उत्पन्न किए गए जो राष्ट्र रूपी वृक्ष को दीमक की भांति खोखला करती रहीं।

राष्ट्र को पश्चिम बंगाल की नक्सलबाड़ी से उत्पन्न हुई वर्ग संघर्ष की विचारधारा के परिवर्तित रूप नक्सलवाद से खतरा है। नक्सलवाद वर्ग संघर्ष के आधार पर मज़दूरों, किसानों और अन्य पीड़ित वर्ग की सहायता के लिए चलने वाली मुहिम थी, परन्तु 1991-92 के समय में नक्सलवाद की यह विचारधारा चीन की माओवादी विचारधारा से प्रभावित होकर कम्युनिस्ट का रूप धारण कर लेता है, जिसका मुख्य उद्देश्य पूँजीवाद का विरोध है। इसी विरोधी विचारधारा की उदाहरण- जब पश्चिम बंगाल की कम्युनिस्ट पार्टियों ने टाटा द्वारा नैनो प्रोजेक्ट को बंगाल से बाहर निकाल, बंगाल की तरक्की को कई दशकों पीछे धकेल दिया। कम्युनिस्ट विचारधारा को कई राजनीतिक पार्टियों ने मार्क्सवाद और लेनिनवाद से जोड़ इसको वामपंथ विचारधारा का नाम दिया जो सदैव राष्ट्र की संस्कृति, समरसता और एकता पर घात करती रही है। सनातन संस्कृति के अभिन्न भाग दक्षिण भारत के कई स्थान कॉम्युनिस्ट राजनैतिक पार्टियों के शासन के अधीन है,जो लाल गलियारे के नाम से प्रसिद्ध है और इन्हीं स्थानों पर ईसाई मिशनरी संस्थाएँ आदिवासी साम्राज्य के उत्थान की आड़ में धर्मांतरण का घिनौना खेल रच रही है। धर्मनिरपेक्ष राज्य में ईसाई मिशनरियों द्वारा न्यायिक प्रणाली में आरक्षित लाभ लेने के लिए अनुसूचित जातियों, आदिवासी समुदाय के लोगों का धर्म परिवर्तन किया जाता है। धर्मांतरण करने वालों ने अपने विषैले बीज पंजाब की वीर भूमि में भी बोने शुरू कर दिए, स्थानीय लोगों के बाहर जाने की लालसा को देख ईसाई मिशनरियों ने उन्हें वित्तीय सहायता देने की आस में धर्मांतरण का खेल रचना आरम्भ कर दिया। ईसाई मिशनरी और वामपंथ का घातक मिश्रण मधुमेह की तरह है, जो राष्ट्र रूपी शरीर को खोखला कर रहा है।

राष्ट्र को सबसे अधिक खतरा कट्टरपंथी वहाबिस विचारधारा से है, दारुल ऊलम शैक्षणिक संस्थान (मदरसा) वहाबिस का प्रचार सूत्र है, जिसके विद्यार्थियों को तालिब कहा जाता है। इसी विचारधारा से आतंकी संगठन तालिबान निर्मित हुआ। भारत में दारुल ऊलम संस्थान 1866 में मोहम्मद कासिम नानौतवी, फैजल उस्मानी द्वारा स्थापित किया गया, विभाजन के पश्चात सादिक उल हक ने इसी विचारधारा का प्रचार पाकिस्तान में करना शुरू किया, जो तालिबान का मुख्य जन्म स्थान भी बना। इसी विषैली विचार धारा के अंतर्गत 1921 में मालाबार केरल नरसंहार, 1946 में बंगाल नरसंहार और 1991 में कश्मीरी पंडितों का कश्मीर से प्रवास देखा गया। बीते दिनों कश्मीर में धर्म पूछकर किया गया नरसंहार भी इसी मानसिकता का प्रतिबिंब है।

ऐसे राष्ट्र विरोधी संगठन और अराजकत तत्वों द्वारा अल्पसंख्यकों का सहारा लेकर भारतीय संविधान के कई अनुच्छेदों का दुरुपयोग कर राष्ट्रीय समरसता और एकता का खंडन किया जाता हैं। इन तत्वों को सामाजिक स्तर पर खदेड़ने के लिए सामाजिक मानसिक स्थिती को प्रबल करने की आवश्यकता है। जिसकी शुरुआत कश्मीर में हो रही पत्थरबाजी, अफगानिस्तान में तालिबानी सोच का समर्थन, पाकिस्तान का समर्थन करने वाले तत्वों की पहचान कर करनी पड़ेगी। सामाजिक गठन से ही सरकार पर सामाजिक और राष्ट्रीय विरोधी तत्वों के विरोध कानून बनाने के लिए दबाव बनाया जा सकता है। यदि सरकार द्वारा इन राष्ट्र विरोधी तत्वों के विरुद्ध कोई मापदंड सिद्ध ना किए गए तो ऐसे तत्व भारत राष्ट्र रूपी वृक्ष को समाप्ति की तरफ धकेल देंगे।

रजत भाटिया
स्वतंत्र लेखक

मानवता के गिरते आयाम के साथ धूमिल समाज

आज़ादी की इस 76 वी वर्षों की यात्रा में हमने कितना कुछ अर्जित कर लिया है। आजादी के समय जहां हम शिक्षा के क्षेत्र में 16 परसेंट की साक्षरता दर वाली आबादी रखते थे वही आज भारत साक्षरता दर के मामले में 84.15 प्रतिशत के पायदान पर खड़ा है। जिसमें महिलाओं की भागीदारी 65.6% है जो कि आजादी के समय केवल 6 प्रतिशत थी।हमने आर्थिक क्षेत्र में खुद को उस मुकाम पर पहुंचा दिया है जहां जीडीपी के लिहाज से भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता है। हमारी सभ्यता और हमारी संस्कृति ने विश्व की सभी सभ्यताओं सभी संस्कृतियों को आदर्श बिंदु प्रदान की है। पर कुछ कलंक ऐसे हैं जो हमारे देश के लिए भद्दे दाग की भांति है, जिसके कारण विश्व पटल पर भारत का सिर शर्म से झुक जाता है। जिसमें सबसे बड़ा कलंक भारत में लगातार बढ़ने वाली मानव तस्करी है।राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की साल 2020 की रिपोर्ट के आधार पर भारत में साल 2020 में सरकार के मानव तस्करी विरोधी इकाइयों ने तस्करी के करीब 1714 मामले दर्ज किए। एनसीआरबी के अनुसार इनमें से ज्यादा मामले महिला और छोटी बच्चों की तस्करी से जुड़े हुए थे। जिसमे ज्यादातर महिला और बच्चे वेश्यावृत्ति, यौन शोषण और मजदूरी के कार्यो में से जुड़े थे। मानव तस्करी का यह गोरखधंधा ने सिर्फ हमारे देश की सुरक्षा व्यवस्था व कानून व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाता है। बल्कि संविधान में दिए गए हमारे मौलिक अधिकारों पर भी प्रश्नचिन्ह लगाता है। जहां हमारे संविधान का आर्टिकल 21 मानव को गरिमा पूर्ण जिंदगी जीने के लिए अधिकार देता है वही आर्टिकल 23 और 24 मानव तस्करी और बेगार पर प्रतिबंध लगाने के साथ-साथ बाल मजदूरी व 14 साल से कम उम्र के बच्चों को खतरनाक जगह पर काम करने पर भी प्रतिबंध लगता है। मगर इन सब कानूनों के होने के बावजूद भी हमारे समाज में मानव तस्करी जैसे घिनौने कृत्य धड़ल्ले से चल रहे हैं। इसके पीछे कौन जिम्मेवार है से बहुत बड़ा स्वाल है। प्रशासन या समाज किसे हम जिम्मेवार ठहराए। मेरी नजरों में प्रशासन से भी ज्यादा जिम्मेवार हमारा समाज है, क्योंकि ये एक सामाजिक बुराई है जिसको हमारे समाज ने जन्म दिया है। क्योंकि हमारे समाज के सोकोल्ड व्यक्ति जो खुद को प्रतिष्ठित कहते है ज्यादातर वही लोग इंसान की गरीबी का फायदा उठाकर उनसे इस प्रकार के अनैतिक कृत करवाते है। मेरा सवाल सिर्फ एक ही है, आखिरकार कोई भी देश या कोई भी सभ्यता कैसे अपने आप को महान कह सकती है जिस देश में मानव के साथ अमानवीय व्यवहार होता है? यह सब प्रश्न तब तक हमारे समाज व देश पर लगते रहेंगे जब तक इस प्रकार की बुराई विद्यमान रहेगी।

मीनू चड्ढा

सर्दियों में गर्म पानी से नहाने के फायदे और नुकसान

सर्दी के दिनों में अधिकतर लोग नहाने के लिए गर्म पानी का प्रयोग करते हैं।ऐसा माना जाता है कि सर्दियों में गर्म पानी से नहाना हेल्थ के लिए फायदेमंद होता है।

लेकिन कई बार ये भी सुनने में आता है कि, गर्म पानी से नहाने से सेहत को नुक्सान भी होता हैं। गर्म पानी को लेकर लोगों के मन में कई भ्रम हैं।ऐसे में आइए जानें गर्म पानी से नहाने के फायदे, नुक्सान और सावधानियों के बारे में

एक्सपर्ट्स के अनुसार, ठंड के दिनों में गर्म यानी, गुनगुने पानी से नहाने का पहला फायदा तो यही है कि यह आपके शरीर में गर्माहट पैदा करता है, और आपको ठंड से बचाता है। साथ ही ठंड के दुष्प्रभावों से भी आपके शरीर और सेहत की रक्षा भी करता है। ऐसे में हम कह सकते है कि,सर्दियों में गर्म पानी से नहाना हेल्थ के लिए फायदेमंद होता है।

एक्सपर्ट्स बताते है कि, अस्थमा के मरीज यानी,सांस संबंधी बीमारियों के मरीजों को ठंड के दिन में बहुत सतर्कता रखने की आवश्यकता होती है। ऐसे में उन्हें गर्म पानी से ही स्नान करना फायदेमंद होता है, ताकि सांस की तकलीफ न बढ़ पाए।

कहा तो ये भी जाता है कि,गर्म पानी से नहाने से ब्लड सर्कुलेशन सही रहता है। सिरदर्द ठीक होता है और अच्छी नींद आती है। गर्म पानी से नहाने से शरीर और हड्डियां काफी रिलैक्स्ड होती हैं। जिन्हें जोड़ों में दर्द की समस्या है उनके लिए गर्म पानी से नहाना फायदेमंद है।

सर्दियों में होने वाली अन्य बीमारियों जैसे सर्दी, खांसी, जुकाम या बुखार से बचाए रखने में गुनगुने पानी से नहाना फायदेमंद होता है। इसके अलावा नींद न आने की समस्या से बचने के लिए गर्म पानी से स्नान करना बेहद फायदेमंद है।

गर्म पानी से नहाने से होने वाले नुक्सान

गर्म पानी से नहाने से बालों और स्किन को नुक्सान पहुंचता है। गर्म पानी बालों और स्किन को ड्राई बना देता है। कई लोगों को खुजली और लाल चकत्ते जैसी समस्या हो जाती है। ज्यादा गर्म पानी से नहाने से शरीर से प्राकृतिक ऑयल खत्म होने लगता है जिसके बाद एलर्जी और इंफैक्शन का खतरा बढ़ जाता है। एक रिसर्च में सामने आया है कि गर्म पानी गर्भवती महिलाओं के लिए सुरक्षित नहीं। इससे पेट में पल रहे बच्चे के दिमाग और रीढ़ की हड्डी पर बुरा असर पड़ता है। कुछ अध्ययनों के अनुसार- गर्म पानी से नहाने से पुरुषों की प्रजनन क्षमता पर भी प्रभाव पड़ता है।

सावधानियां

- ज्यादा गर्म पानी की जगह गुनगुने पानी से नहाएं।
- पानी का तापमान 45 डिग्री से ज्यादा न हो।
- गर्म पानी से आधे घंटे से ज्यादा न नहाएं।
- बच्चों के नहाने के लिए पानी का टैम्परेचर 37-38 डिग्री से ज्यादा न हो।

अरुण अरोरा
दिल्ली

गुजर रही हैं जिंदगी ऐसे मुकाम से, अपने भी दूर हो जाते हैं जरा से जुकाम से...
कायनात में एक कातिल बीमारी की हवा हो गई,
वक्त ने कैसा सितम ढाया के दूरियां ही दवा हो गई

अन्नू

होनहार पुत्र

कुछ दिन पहले न्यूज़ चैनल पर देखा तो पता चला की देश के सुपर स्टार के होनहार पुत्र को उच्च न्यायालय ने कानून के अनुसार जमानत दे दी है और उसके पीछे वजह उसके पास सीधे ड्रग्स का बरामद न होना बताया गया। इससे पहले जब उसकी गिरफ्तारी की बात आई तो एनसीबी ने सारी चीज़े पुख्ता करके निचली अदालतों में उसकी जमानत नहीं होने दी, क्योंकि सारे आरोप सही थे और जांच अधिकारी ने भी कहीं पर समझौता नहीं किया।

फिर खेल शुरू हुआ पिता के रसूख और नेता जी की खूनस्स का। पहले स्टार पिता के सहयोगी स्टार कूदे, 21 साल के नशे के आदी व्यक्ति को 14 साल का नासमझ बच्चा साबित करने के लिए और फिर एक योजना के तहत मीडिया में उसके तारीफ़ के कसीदे पढ़े गए कि कैसे बाहर आकर वो अच्छा बेटा व नागरिक बन कर गरीबों की सेवा करेगा, 21 साल के इस युवा को इतना मासूम बता दिया गया जिसे शायद ये पता ही नहीं है की ये ड्रग्स क्या होती है और वो भी तब जब उसका स्टार पिता अपने एक पूर्व में दिए गए इंटरव्यू में अपने द्वारा न किए गए नशे व अय्याशी के शौंक को वो अपने बेटे द्वारा पूरे करने की चाहत में देखता है और अपनी इस परम इच्छा को वो सरेआम देश के मीडिया में व्यक्त करता है।

हमारे देश में किसी को भी कुछ भी बोलने की आज़ादी है इसलिए लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाने वाला ये मीडिया उसे एक आदर्श पिता की इच्छा के रूप में इस मानसिकता को देश व् समाज के सामने परोसता है संयोग से शायद माता सरस्वती उस पल उसकी जिह्वा पर विराजमान थी तो उसकी इच्छा पूरी हो गई।

अब, जब सहयोगी नायकों से कुछ नही हो पाया तो फिर सरकार के मंत्री आए मैदान में, वैसे तो इसकी पटकथा का लेखन माननीय नेता जी ने उसी दिन ही कर दिया था जिस दिन वो स्टार पुत्र के बचाव में पहली बार कूदे थे लेकिन उस समय उन्हे शायद इतना मामला खींचने की उम्मीद नहीं थी । नेता जी के कूदने की भी बड़ी वजह यह थी कि

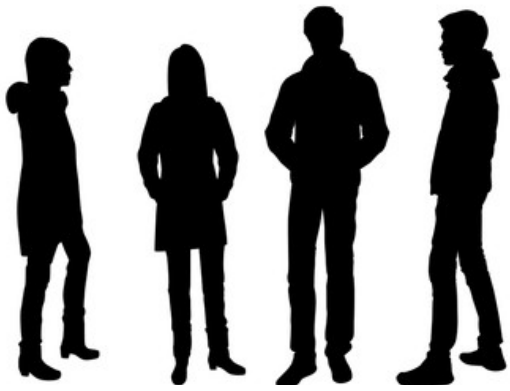

पूर्व में कुछ महीने पहले एनसीबी द्वारा उनके दामाद को ड्रग्स रैकेट में गिरफ्तार किया था और मामला सेंट्रल एजेंसी व् नशा तस्करी से जुड़े होने के कारण मंत्री महोदय उसी समय से खुन्नस खाए बैठे थे । अब मौका मिला खुन्नस निकालने का तो पहले स्थानीय एनसीबी चीफ पर जाति व धर्म के आधार पर हमले किए गए, फिर उसके परिवार पर बिना सिर पैर के आरोप लगाए गए जिनका इसे केस से कोई संबद्ध नही था और जब उससे कुछ ज्यादा हासिल नही हुआ तो उसे रिश्वत के आरोप में फंसा कर उसके ऊपर जांच बिठवा दी और सबसे अंत में इसे विश्वविख्यात आरोप ' बीजेपी कि साजिश " बता दिया गया

सबसे अंत में देश के जाने माने वकीलों की फौज को मैदान में उतारा गया क्योंकि पिता के पास पैसे की कोई कमी थी नही जो ये विकल्प छूट जाय, ऐसे पेशेवर वकीलों को इसमें पहले से महारात हासिल होती है कि कैसे कानून के कमज़ोर पहलुओं का फ़ायदा उठा कर उस नशा करने वाले नायक पुत्र को देश का आदर्श प्रस्तुत किया जाए। क्या हुआ जो वो जो उसने ऐसा कुछ कर लिया तो एनसीबी को क्या जरूरत थी जो बच्चे के पीछे पड़ गई। अभी तो देखना, आप सब कि कुछ दिनो में ये सब मिलकर उस अधिकारी व उसकी पूरी टीम को ही दोषी साबित करवा देंगे की उसने ही देश के इस होनहार सपूत को इसमें फंसाया है और ऐसे अधिकारी देश भविष्य के लिए खतरा है इन्हे हटा कर देश बचाया जाये !

वैसे मुद्दा तो ये कब का ही खत्म हो जाता,अगर मीडिया अपने टीआरपी की भूख की चाहत में उसके बैठने,उठने,लेटने,खाने पीने के स्वाद, सोने की उट पटांग खबरों को नही छापता या फिर वो गिरफ्तार करने वाले अधिकारी दबाव में आ जाते। अब किस्मत बेचारे एनसीबी मुखिया की ख़राब थी जो उसे इतना समर्थन ना तो विपक्षी पार्टियों से मिला और ना ही जनता से मिला और नही ही अपने विभाग से जो सही के लिए साथ मजबूती से खड़े रहे,

विपक्षी दलों का समर्थन शायद इसलिए नही मिला क्योंकी इसमें कोई ऐसा मसाला नही था जिससे मोदी या बीजेपी को कोसा जा सके, कुछ तथाकित सेक्युलर नौटंकी वाले पत्रकारो को पहले तो इसमें माइनॉरिटी को खतरा वे देश की धर्म निरपेक्षता को खतरा वाला तड़का लगाने की सूझी तो सही लेकिन फिर इसमें ज्यादा समर्थन ना मिलता देख व अपने से बड़े मगरमच्छों को पहले से इसमें विराजमान देख वे भी पतली गली से ही निकल लिए, कुछ समय बाद मीडिया को जब अपनी टीआरपी की भूख कम होती दिखाई दी तो उसे भविष्य में इन नायको द्वारा विज्ञापनों से होने वाली आय की याद आई तब उसने भी अपना पक्ष दूसरी तरफ घुमा लिया। मौका देख कर पिता की उन कंपनियों ने भी उन विज्ञापनों

को फिर से दिखाना शुरू कर दिया जिन्हें उसने अपने प्रोडक्ट की बिक्री पर होने वाले नुक्सान के चलते हटा दिया था शायद पहले उनको ये लगा होगा कि बेटे के ड्रग्स रैकेट में पकड़े जाने पर पिता की विज्ञापन वाले प्रोडक्ट कौन लेगा, लोग शायद ऐसे पिता का विज्ञापन वाले समान से किनारा करने लगेंगे क्योंकि जिसे अपने बच्चे की शिक्षा व संस्कारो से मतलब नही वो दूसरों के लिए क्या आदर्श प्रस्तुत करेगा, लेकिन ऐसा हुआ नही क्योंकि शिक्षा और संस्कार की कितनो को पड़ी है जो वे इतना सोचे, बस बेटा पढ़ लिख कर कमाने लग जाए तो हम लोग अपने दायित्व से मुक्त हो जाए इससे भी ज्यादा आगे अपने आप को आर्थिक तोर मजबूत करने के लिए कुछ बुढ़ापे के लिए पेंशन वाली कोई सेविंग प्लान ले लेंगे। कि अगर बच्चो ने बुढ़ापे में अपने पास रख लिया तो ठीक वरना पेंशन से एक काम करने वाला सेवादार रखे लेंगे और फिर मरते वक्त दोष देंगे समाज और देश की शिक्षा नीति को। परन्तु ये कोई याद नही रखेगा की हमने इसके लिए क्या किया, हमने कितना योगदान दिया अपने बच्चे के दिमाग में सही बात डालने का , सब कुछ विद्यालयों के भरोसा छोड़ दिया या फिर महंगी फीसों का हवाला देकर अपना पल्ला झाड़ दिया।

ध्यान रहे ,आज अगर हमने इनसे अपने बच्चो को नही बचाया तो दोष फिर इनका नही केवल हमारा ही होगा क्योंकि आदर्श तो हम लोगों ने ही इनके सामने रखें।

सिर्फ विद्यालयों के भरोसे मत रहिए क्योंकि सरकारी स्कूलों में हम बच्चो को भेजते नही और अधिकतर प्राइवेट स्कूलों ने शिक्षा का पूर्णतया व्यवसायीकरण कर दिया है उन्हे आपकी बच्चे के जीवन और उसके भविष्य से कोई सरोकार नहीं है और नही उन्हे देश से, उन्हे सिर्फ अपनी फीस समय पर चाहिए, हां अगर वो समय पर नहीं मिली तो फिर आपको न्यायालय द्वारा भी फीस देने के लिए भी बाध्य किया जा सकता है

गलत का विरोध करना सीखिए भाई , फिर वो चाहे आपके देश के भविष्य के लिए हो या फिर आपके बच्चे के लिए, क्योंकि दोनों का ही प्रभाव आप व आपकी आने वाली पीढ़ियों पर पड़ेगा।

निकालिये, अपने बच्चो को इस काल्पनिक फिल्मी दुनिया से बाहर क्योंकि ये उतरदाईत्व हम सब का है, कम से कम इतना प्रयास तो अवश्य होना चाहिए कि आने वाली पिड्डीयाँ सही मायनो में देश के नायकों के बारे में जान सके, ना की ऐसे नशेड़ी फिल्मी नायकों के बच्चो के बारे में।

अतुल भारद्वाज
लुधियाना (पंजाब)

हास्य कविता (अंग्रेजी के साइड इफ़ेक्ट)

म्हारे पड़ोस मैं एक ताऊ आर ताई रह्या करते
लोग उनने एक दूसरे का जानी दुश्मन कह्या करते
दुश्मनी दुश्मनी मैं 6 बालक होए
आर सारे माह के नहाए धोए
प्यार होता तो पक्का क्रिकेट की टीम बणी होती
ताई लड़न की बजाय लंगोट धो री होती
एक दिन सबेरे सबेरे
नहा धो के ताई शीशा देखण लागी
अपणे हाथ नै ठुड्डी पै टेकण लागी
ताऊ खाट पै बैठ्या उसनै देख कै बोल्या
काम छोड़ कै शीशा देखण नै के हो रया
जा गोबर गेर आ टेम हो रया
ताई कित घाट थी
ताई नै भी ताऊ के मुंह खोलण की बाट थी
बोली कती ना जाऊँ
भतेरा कर लिया काम
इब तो मैं बैठ कै खाऊँ
ताई कुछ सोच के थोड़ी नरमाई
ताऊ कानी देख कै मुस्काई
बोली सुणो हो के
सारी जिंदगी लड़ाई मैं लिकड़ गी
तेरी हरकत देख देख मैं भी बिगड़ गी
इब बची खुची जिंदगी प्यार तै गुजार ले
मैं तनै प्यार दूँ तू मनै प्यार दे
ताऊ ताई का बदल्या रूप देख हैरान था
मुस्कुरा तो दिया पर भीतर तै परेशान था
ताई बोली सारा सिर धौला हो गया
न्यू बता मैं के करूँ
जे फेर काले हो जावें ना
राम की सूं तेरे नाम की खूब लाम्बी मांग भरूँ
ताऊ नै पहली बार ताई की इस बात पै प्यार आया
उसकी अंग्रेजी नै घणे दिन बाद बल खाया
ताऊ स्टाइल मार कै बोल्या
U should die
बस फेर के था
ताई का पारा हाई
मतलब कुछ और समझ बैठी
आर बिना सोचे समझे
कर दी ताऊ की ठुकाई
बोली घणा ऐ बोलण लाग गया
जब तै तनै अंग्रेजी आई
बालक ठा के अस्पताल मै छोड़ आये
बोले म्हारी माँ का पारा नीचे ना आता
जब तक उरै ऐ राखियो
डॉक्टर आगै हाथ जोड़ आये
ताऊ स्ट्रेचर पै पड़ा अंग्रेजी नै
हरियाणवी मैं गाल देवै था
बोल्या नाश जाइयो अंग्रेजी तेरा
मनै कह्या कुछ तनै मतलब कुछ बणाया
मनै तो बाल रंगण की कह्या था
तू धोखेबाज लिकड़ी
तनै मैं ऐ जी ला कै रंगवाया
इसा हाल तो कदे नी होया था
जो मर्ज़ी कहूँ था
हरियाणवी मैं लड़ कै
कम तै कम बच्या तो रहूँ था।

सविता गर्ग "सावी"
कवयित्री, गीतकार, गायिका
पंचकूला (हरियाणा)

श्री राम भक्तो को मेरा पत्र

राम कथा लिखना कहूँ, काज नहीं आसान।

राम कृपा ही जानिये, लिखा राम गुणगान॥

अथ श्री महा आनंद रामायण के रचने का सटीक कारण उपरोक्त दोहा में स्पष्ट है। दोहा विधा में कोई एक महाकाव्य लिखने/पढ़ने की इच्छा सम्भवत: तब से है, जबसे मैने साहित्य समझने व गढ़ने का कार्य आरम्भ किया। आदिकवि महर्षि बाल्मिकी जी द्वारा रचित रामायण काव्य ग्रंथ सर्व प्रथम देव भाषा संस्कृत में लिखा गया..तब आम जन की भाषा संस्कृत हुआ करती थी।

धीरे धीरे समय के साथ संस्कृत केवल विद्वानों की भाषा बनकर रह गई।

आम जन से दूर होती संस्कृतमय रामायण का स्थान अवधी में रचित गोस्वामी तुलसी दास कृत रामचरित मानस ने ले लिया। सम्पूर्ण विश्व में तुलसी कृत रामचरित मानस एक वंदनीय व पूजनीय ग्रंथ बनकर रामभक्तो के हृदय के साथ मंदिर का आवश्यक अंग बन गया। तुलसी कृत मानस का वाचन घर घर होने लगा, लेकिन मानस की भाषा बोली अवधी में होने के कारण अवधी न जानने वालो को कथा में प्रयुक्त शब्दों को समझने में कठिनाई होना स्वाभाविक समस्या मानी जा सकती है। हांलाकि संस्कृत से अधिक सहज अवधी को समझ पाना है।

अथ श्री महा आनंद रामायण रामकथा को और अधिक सहजता से लोगो को जोड़ने का प्रयास मात्र है। इसमें प्रयुक्त भाषा शैली आज के समय बोले जाने वाली खड़ी हिन्दी है, आवश्यकता होने पर उर्दू की शब्दावली का भी आंशिक प्रयोग है। ब्रज वा अवधी के आंचलिक शब्दों से भी दोहो को सजाने का कार्य किया है। भाव यहीं की राम कथा पढने वाला इस पुस्तक को पढ़ने के साथ कथा यात्रा भी करे।

अंत में यहीं कहूंगा की यह इतना सरल और सहज कार्य नहीं है, जितनी सरलता और सहजता से हो गया प्रतीत हो रहा है। इच्छा शक्ति तो सदैव रही लेकिन कभी समय साथ नहीं रहा। जब भी कलम उठाई कोई न कोई अड़चन सम्मुख आ ही गई..फिर मैं दस बीस दोहे से अधिक लिख न सका। मैं समय के बहाव में दो गज बढता... लेकिन समय चार गज पीछे ले जाकर छोड़ देता।

लेकिन कहते है न , यदि मनुष्य अपने शुभ संकल्पों के अधीन होकर कार्य करे तो सफलता निश्चित मिल ही जाती है। मेरे जीवन में कभी जीजिविषा और जीवटता की कोई कमी नहीं रही,जो ठान लिया सो ठान लिया। मेरा अखंड विश्वास रहा है की मेरे शुभ संकल्प के साथ मातु वाग्गेश्वरी सदैव रही। इसी शुभ संकल्पो का परिणाम था कि शनै शनै ही सही किन्तु मेरा संकल्प आकार तो लेने लगा था। लेकिन बीच -बीच में व्यवधान अपना खेल कर ही जाते थे, इस बार भी ऐसा ही कुछ हुआ, मेरे द्वारा रचित सीता-राम कथा दोहावली जिसमें लगभग सौ दोहों का संकलन था। मेरी लापरवाही के कारण नष्ट हो गया.....मन में भारी क्षोभ और पीड़ा थी, किसको दोष देता? कागज पर अंकित शब्द स्याही बह चुके थे...लेकिन जो कुछ अब तक कागज पर लिखा था...वह मन के कागज पर अमिट था।

समग्र शक्ति को एक बार फिर संचित किया. मुझे अच्छी तरह याद है दिन 25 अक्टूबर 2019 धन तेरस का पुनीत त्यौहार था, मुझे जो कुछ मिटा हुआ याद था..पूर्ण इच्छा शक्ति के साथ लिखना शुरू किया। आरम्भ में दस दोहे रोज लिखने का संकल्प लिया इस तरह से एक लक्ष्य तैयार हो गया कि अगले वर्ष 2020 में धन तरस तक राम कथा दोहावली पूर्ण हो जायेगी।

तब प्रथम दोहा लिखा

" गण गणपति कर जोड़ कर, पदम नवाऊँ शीश।

राम कथा दोहावली, लिखूँ आज जगदीश॥

नमन करूँ माँ शारदा, रख चरणों में माथ।

कलम लिखे दोहावली, रख दो सिर पर हाथ॥

श्री बजरंगी के बिना, नहीं राम का काज।

हे हनुमत तुलसी समझ,रखना मेरी लाज॥

माँ शारदा की असीम कृपा बरसने लगी , श्री राम गाथा के गूढ़ रहस्य श्री बजरंग बली के आशीर्वाद से दोहो में सहजता से आने लगे।

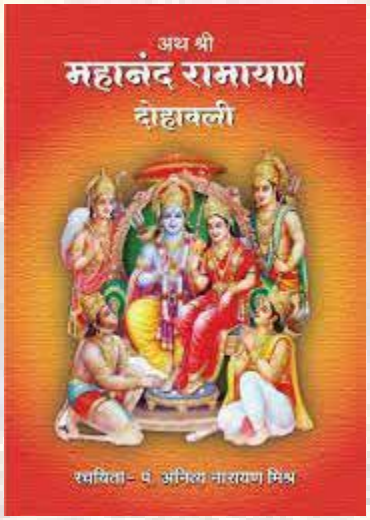

इधर धीरे धीरे पूरा विश्व कोरोना के चलते लॉक डाउन की स्थिति में आने लगा। लोगो ने अपनी जान बचाने के लिये स्वयं को अपने परिवार के साथ घरो में कैद कर लिया।

मेरे पास भी घर में रह कर कुछ विशेष करने को रहा नहीं।

तब मैने अपनी सम्पूर्ण उर्जा

एवम् ध्यान राम कथा दोहावली की ओर लगा दिया। माँ भगवती शारदा के आशीष से जुलाई 2020 तक लंका कांड, मेघनाद वध तक की कथा लिख चुका था। लेकिन इस बीच काढ़ा चिकित्सा के मध्य कोरोना कब होकर चला गया, इसका तब तो पता नहीं चला, लेकिन धीरे- धीरे स्वास्थ्य गिरने लगा। लेखन की गति धीमी तो जरूर हुई लेकिन थमी नहीं। संजोग से जिस दिन (05 अगस्त 2020) अयोध्या में भूमि पूजन का कार्यक्रम था, रावण का वध उसी दिन लिखा गया।

अथ श्री महा आनंद रामायण आज आपके समक्ष सम्मान सहित प्रस्तुत करने जा रहा हूँ। इसे प्रकाशित करने का बीड़ा हिंदी श्री प्रकाशन भदोही ने उठाया है। इस पुस्तक में कुल 2008 दोहे व मत्तसवैया छंद है। इसका युद्ध पर्व वीर छंद (आल्हा) में लिखा गया है।

यह पुस्तक लिखने का भाव स्वांत: सुखाय ही है।

विनित
पंडित अनित्य नारायण मिश्र

अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के उपलक्ष्य में

सच्चे भावों का निर्माण है गीता में
ईश्वर के होने का प्रमाण है गीता में
मन,कर्म और वचन से करो तुम पठन
हमारे जीवन का कल्याण है गीता में
उस विधाता की ही बात है गीता में

अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव

पावन फूलों की सौगात है गीता में
दूर हो जाएंगे दुःख के बादल सभी..
कर्म और ज्ञान की बात है गीता में..

-वीरेंद्र

मेरा हरियाणा

भारतवर्ष की भूमि पर न्यारा हरियाणा है
बुजुर्गों के स्नेह सा सबसे प्यारा हरियाणा है

श्री कृष्ण ने गीता को विश्व भर मे फैलाया है
कुरुक्षेत्र की धरा से विश्व को ये दर्श कराया है
ज्ञानप्रद श्लोकों को अपने सुंदर कंठ से ग़ाया है
अज्ञानी के भी कर्णो को इसका स्वर भाया है
22 जिलों की जनता के अंतर्मन में हरियाणा है
भारतवर्ष की भूमि पर..

लख्मी, बाजे, जगदीश ने रागिनी खूब रचाई है
हर एक मानस के दिल मे जगह खूब बनाई है
अतिथि सत्कार में रहे हरियाणा सबसे आगे है
मेहमानों के आने से भाग मेहमान के जागे है
गर्मी, सर्दी,बारिश में भी झूमे गाए हरियाणा है
भारतवर्ष की भूमि पर..

खेल कबड्डी,कुश्ती हमारे विश्व पटल पर छाए है
बेटा हो या हो बेटी सभी पदक खेलों में लाए है
नीरज,रवि,सिंधु,सुरेंद्र ने दुनिया को दिखाया है
गोल्ड,कांस्य और रजत से प्रदेश का मान बढ़ाया है
पदक तालिका में भी सबसे ऊपर हरियाणा है
भारतवर्ष की भूमि पर..

मुर्रा नस्ल की भैंस यहाँ बाल्टी भर दूध देती है
जवानों को ताकत के साथ संस्कार भी देती है
खल,बिनोला चोकर और काजू खूब खाती है
हरियाणा को भारतभर का सिरमौर बनाती है
गूंद, चूरमा,दूध,दही में फिर आगे हरियाणा है
भारतवर्ष की भूमि पर..

देश की श्रेष्ठ एकता में हरियाणा सबसे आगे है
देख हौसलें इस माटी के दुश्मन भी डर भागे है
पांडे, नाहर,सूरजमल आशाओं के केंद्र बने
फौलादी सीने जिनके दुर्ग दीवार से बन तने
सीने में हिन्दोस्तान और माथे पर लिखा हरियाणा है
भारतवर्ष की भूमि पर सबसे न्यारा हरियाणा है

वीरेंद्र राठौर

A Walk in a forest

When I started my walk,
I heard the leaves talk,
The wind swayed with happiness,
The leaves enjoyed like a mistress.
A walk in a forest is like a paradise
with beauty and joy

The beautiful flowers greeted me,
While the bees danced with me,
As I passed through the evergreen,
The lioness sat like a queen
A walk in a forest is like a paradise
with wonder and evergreen

The birds chirped and sang,
And i felt welcomed here again
As the monkeys played around,
The elephant made a bound
A walk in a forest is like a paradise
with bound and sound

The crystal clear waterfall,
Made me see my soul.
Its precious water,
Made my mind free from danger.
A walk in a forest is like a paradise
with quite and peace

Kriti Binani
Bikaner, Rajasthan

अब रैलियों की भीड़ किसी दल या नेता की लोकप्रियता का पैमाना नहीं होता

राजनैतिक रैलियों में जुट रही भीड़ से इस बात का अंदाजा नहीं लगाना चाहिए कि मतदाता का रूख किधर जा रहा है. ऐसा पहली बार नहीं हुआ है जब सभी दलों की रैलियों में भीड़ दिखाई दे रही है.ऐसा ही नजारा 2019 के लोकसभा चुनाव के समय भी देखने को मिला था.जब प्रियंका वाड्रा ने उत्तर प्रदेश कांग्रेस की कमान बतौर प्रभारी संभाली थी. इसी तरह से 2017 के विधान सभा चुनाव में भी अखिलेश और राहुल गांधी की संयुक्त रैलियों में भी अपार जनसमूह उमड़ता था,2017 का विधान सभा चुनाव कांग्रेस और सपा ने मिलकर लड़ा था,लेकिन जीत का का स्वाद बीजेपी ने चखा.बीजेपी ने 300 से अधिक सीटें हासिल की थीं. खैर,बसपा की तो बात ही निराली है, बसपा की रैलियां तो हमेशा से ही एतिहासिक रहती हैं.बसपा सुप्रीमों मायावती के बारे में तो यहां तक कहा जाता है कि वह एक मात्र ऐसी नेत्री हैं जिनके लिए मैदान छोटा पड़ जाता है. मायावती जैसी रैलियों का नजारा कहीं और नहीं सिर्फ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की रैली में देखने को मिलता है. इस लिए किसी की रैली में उमड़ी भीड़ के आधार पर किसी पार्टी या नेता की जीत का दावा करना,बेईमानी है. यहां एक वाक्या याद आ रहा है. बिहार में विधान सभा चुनाव चल रहे थे,सभी दल वोटरों को लुभाने में लगे थे,रैलियों में भीड़ भी दिखाई दे रही थी,लेकिन बिहार के मुख्यमंत्री और पुनः सीएम पद के प्रबल दावेदार माने जा रहे सुशासन बाबू नीतिश कुमार हैरान-परेशान थे,उनकी रैलियों से भीड़ न जाने कहां गायब हो गई थी. नीतिश की हाताशा का आलम यह था कि वह मान चुके थे कि सत्ता उनके हाथ से फिसल कर राष्ट्रीय जनता दल की तरह खिसक रही है,लेकिन जब वोटिंग मशीनों से नतीजे निकले तो राजनैतिक पंडित ही नहीं नीतिश कुमार भी आश्चर्यचकित रह गए. तब इस बात का अहसास हुआ कि नीतिश कुमार की जीत में महिला वोटरों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी,जो नीतिश सरकार द्वारा प्रदेश में शराब बंदी किए जाने से महिलाएं नीतिश सरकार की मुरीद हो गई थीं,इसके अलावा कानून व्यवस्था में सुधार भी एक अहम मुद्दा था,बिहार की महिला वोटरों को लगता था कि यदि बिहार में राष्ट्रीय जनता दल की सरकार बन जाएगी तो बिहार में पुनः जंगलराज कायम हो जाएगा.माफिया खुले आम तांडव करने लगेंगे. इसी प्रकार का नजारा पश्चिम बंगला में देखने को मिला, जहां बीजेपी की रैलियों में जनसैलाब उमड़ रहा था. ऐसा लग रहा था कि ममता बनर्जी की सत्ता से विदाई तय है,बीजेपी की रैलियों में जनता की मोदी के प्रति दिवानगी देखने लायक थी. पश्चिम बंगाल के कोलकाता में ब्रिगेड मैदान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रैली में उमड़े जनसैलाब की तस्वीरों को कौन भूल सकता है, क्योंकि पिछले कुछ दशकों में यहां किसी भी नेता को सुनने के लिए इतने लोगों की भीड़ एक साथ इकट्ठी नहीं हुई थी. इस मैदान के बारे में यह कहा जाता रहा है कि केवल कम्युनिस्टों की रैली में ही यह पूरा भर जाता रहा है. टीएमसी की रैली में भी इस मैदान में काफी भीड़ जमा होती थी, पर बीजेपी की यहां हुई रैली में जुटी भीड़ मायने रखती थी, इस रैली के जरिए बीजेपी ने पश्चिम बंगाल में अपनी स्थिति को दिखाया था.

भारतीय जनता पार्टी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रैली के लिए 10 लाख की भीड़ जुटाने का टारगेट रखा था, इसके लिए बीजेपी ने बंगाल के हर शहर हर गांव से कार्यकर्ताओं को कोलकाता पहुंचने का आदेश दिया था. दरअसल भारतीय जनता पार्टी के लिए यह रैली बंगाल में प्रतिष्ठा का विषय बन गई थी. इसी वजह से भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेताओं ने बंगाल के नेताओं को साफ निर्देश दिया था किसी भी कीमत पर इस रैली को सफल बनाना है. कैलाश विजयवर्गीय इस रैली की देखरेख खुद कर रहे थे. उन्हीं के नेतृत्व में बंगाल के लोकल बीजेपी नेताओं ने कोलकाता के ब्रिगेड मैदान में इतनी बड़ी संख्या में जनसैलाब जुटाया था. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कोलकाता के ब्रिगेड मैदान में तीन रैलियां की हैं, बंगाल विधान सभा चुनाव से पहले मोदी ने यहां 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव में रैली की थी. वह भी भीड़ के हिसाब से ऐतिहासिक ही थी.लेकिन जब नतीजे आए तो बीजेपी चारो खाने चित नजर आई. ममता फिर से सीएम बनी.

दरअसल, एक समय था जब किसी दल या नेता की रैलियों में जुटने वाली भीड़ से अंदाजा लगा लिया जाता था कि किस दल का पलड़ा हल्का या भारी है.इसके पीछे की मुख्य वजह यही थी कि तब मतदाता या जनता अपनी मर्जी से अपने चहेते नेताओं के भाषण सुनने और उसे देखने आया करते थे,लेकिन धीरे-धीरे भीड़ जुटाने के लिए रणनीति बनने लगीं. लोगों को खाने-पीने और पैसे का लालच देकर रैली स्थल पर बुलाया जाने लगा.इसी लिए कई बार भीड़ में जो चेहरे एक पार्टी के रैली में दिखाई देते थे,वह ही चेहरे दूसरी पार्टी की रैली में भी दिख जाते थे. ज्यादा पीछे नहीं जाकर 2014 एवं 2019 के लोकसभा और 2017 के विधान सभा के चुनावों की बात की जाए तो इन तीनों ही चुनावों में नेता और दल भीड़ जुटाने के लिए तमाम हथकंडे अपनाते दिख जाते थे,इस बार भी यही सब हो रहा है.पार्टियां और उनके रणनीतिकार बाकायदा दावा करते हैं कि अमूक नेता की रैली में इतने लाख की भीड़ जुटेगी.जुटती भी है,लेकिन इसमें कौन किस पार्टी को वोट देगा,कोई नहीं जानता है.कुल मिलाकर अब रैलियों की भीड़ से किसी दल या नेता की लोकप्रियता का पैमाना नहीं होता है. न इसके आधार पर किसी वोटर को यह धारणा तय कर लेना चाहिए कि किसकी सरकार बनने वाली है. इसके लिए किसी नतीजे पर पहुंचने की बजाए नतीजों का इंतजार करना ही बेहतर है.

अजय कुमार,लखनऊ

समीक्षा

मेरी उड़ान (सविता गर्ग सावी)

सविता गर्ग सावी, एक बेहद संवेदनशील व्यक्तित्व हैं जिंदादिल, खुशमिजाज़ वैसा ही उनके लेखन में भी नजर आता है | कृष्ण भक्त हैं बहुत ही सुंदर ,भक्ति श्रद्धा, प्रेम से भरपूर भजनों का सृजन किया है, चार भजन उनके रिलीज़ भी हो चुके हैं जो बहुत ही शानदार भजन हैं और पसंद किए जा रहे हैं | "मैं मीरा सी" उनकी पहली पुस्तक बहुत ही सुंदर भक्ति रस से भरपूर है जो सभी कृष्ण भक्तों को खूब पसंद आई है | अब उनकी यह दूसरी पुस्तक "मेरी उड़ान" प्रकाशित होकर पाठकों के पास पहुंच चुकी है| बहुत ही सरल, सहज अभिव्यक्ति के साथ उन्होंने अपने मन की अलग-अलग भावनाओं को कविताओं में पिरोया है |

उनकी पहली कविता की बात करें तो "मतलबी दुनिया" इस संसार का सार कि अपेक्षा मत रखो ,उपेक्षा ही मिलती है या कर्म कर फल की चिंता मत कर सुंदर कविता है | मनुष्य अधिकतर अतीत में रहना पसंद करता है वह उन्हीं खट्टी मीठी यादों में खोया रहता है, यही सच है,"यादें" कविता बखूबी इस बात को कहती है कि

यादें कैसी भी हों , भावुक कर जाती है

सच ही लिखा है| एक कविता है "खूबसूरत " जिसमें वह फिर से अतीत को याद करती हैं और बचपन की बात करती हैं ...जहां कोई फिक्र नहीं थी, कोई गुरूर नहीं था ,अपनी मर्जी से हम अपने जीवन सब रंग भरते थे.....

बड़ा ही खूबसूरत था वाकया
वो जिंदगी का ...

एक अच्छी रचना है | आज इंसान क्या से क्या हो गया है, हम सब देखते हैं ,सोचते हैं, दुखी होते हैं, सविता ने अपनी "इंसान" कविता में बहुत सही लिखा है कि

जीतने की दौड़ में पागल हुआ
आह !इंसान को ही खा गया इंसान

स्त्री अपने मन की अभिव्यक्ति आसानी से नहीं कर पाती ,व्याकुलता में लिखकर या चित्र बनाकर या किसी और कला के माध्यम से मन के उदगारों को प्रकट करती है कि "उड़ना सीख लिया"

कहने के आदी ना थे
लिखना सीख लिया

अब मेरे हौसलो ने भी
उड़ना सीख लिया

बहुत अच्छी कविता है | हम जो अपने आसपास देखते हैं उसे अपनी रचनाओं में उतारते हैं, "लेडी पुलिस" जो उन्होंने एक लेडी पुलिस को देखकर महसूस किया अपनी कविता में उतारा . ...

रंगी है हिंद के रंग में

वर्दी पहचान है उसकी.,..उस स्त्री को देखकर गर्वित होती सविता के मन से यह सच्चे भाव उत्पन्न हुए | सविता एक जगह बताती हैं कि मैं लिखती हूं तो क्यों लिखती हूं जैसे कि

मैं लिखती हूं प्रेम दर्शाने को
मैं लिखती हूं जज़्बात बताने को
मैं लिखती हूं बस लिखते जाने को

भगवान उनकी यह मनोकामना, यह सुंदर इच्छा हमेशा पूरी करते रहें वो और, और, और अच्छा लिखती चली जाएँ, उनकी कलम का जादू और गहरा होता जाए | पाठकों के दिलों में अपनी जगह बनाता चला जाए |

एक कविता में वो जिंदगी से उलझती हैं और कुछ यों अपने मन की बात करती हैं कि

उलझा ना मुझे जिंदगी
मैं उलझी तो तू भी उलझ जाएगी
मैं तो सुना दूंगी दर्द तुझे
तू सोच किसे बताएगी

सच में ज़िन्दगी हमें कई बार उलझाती, डराती है सोचिए अगर कभी जिंदगी खुद ही उलझ जाए कभी तो उसे कौन सुलझा पाएगा? वह किसे अपने मन की बात बताएगी? बहुत अच्छी कविता बन पड़ी है यह |

एक और कविता उनकी जो माँ पर लिखी गई है कि

माँ माँ होती है
क्या अपनी क्या पराई
सह नहीं सकती बच्चों से
एक पल की भी जुदाई

इस कविता में बहुत कुछ लिखा है जो आज का सच है कि बच्चे जब बड़े होते हैं , किस तरह से सब छोड़-छाड़ कर निकल जाते हैं , लापरवाह हो माता पिता की तरफ उदासीन हो जाते हैं

लेकिन समय करवट बदलता है , एक दिन उन्हें भी वो सब देखना पड़ता जो उन्होंने किया था |

स्त्री कहने को एक होती है लेकिन अलग अलग किरदारों में बंटी होती है माँ, बेटी, बहन, पत्नी, प्रेमिका हर रूप में वो सशक्त, मजबूत और प्रेम से भरपूर होती हैं और अपने कर्तव्यों का पालन बखूबी करती है " मैं नारी हूं" इस कविता में यही बताया गया है कि

मैं नारी हूं
सब किरदार निभा लेती हूं

शहीदों पर उनकी एक बहुत अच्छी रचना है "भरी उड़ान परिंदे ने"

लिपट कर आऊंगा तिरंगे में
या फिर लहरा कर आऊंगा
दहाड़ूंगा शेर बन दुश्मन पर
युद्ध भूमि में धूल चटाऊंगा

हुए शहीद मिली शहादत
आए लिपट तिरंगे में
बड़ी शान से कहा अलविदा
भरी उड़ान परिंदे ने

बहुत ही मार्मिक रचना है, शहीदों को शत शत नमन करती हुई उन्हें श्रद्धांजलि देती हुई रचना भावपूर्ण देशभक्ति से ओतप्रोत | सविता की कविताएँ मानवीय संवेदनाओं से भरपूर होती हैं, श्रृंगार, प्रेम, दया, करुणा, भूख,गरीबी, दुख सुख अपने पराये सब कुछ समेटे हुए|

" मैं गीत प्रेम के गाऊंगी"

तुम बांधो तो सही डोर से
मैं खिंची चली आऊंगी
मेरे हमदम मेरे राही
मैं हर पल तुम्हें चाहूंगी
तुम चंदा से बन जाना
चांदनी मैं बन जाऊंगी

एक मधुर गीत के रूप में भी प्रस्तुत की जा सकती है |अपने प्रिय के प्रति प्रेमभरे उद्गार सभी स्त्रियों के मन के भाव कहती प्रेममयी रचना| उनकी एक कविता "तमाशा" लड़कियों को मुसीबत में कमजोर ना होकर उन्हें काली और चामुंडा होने के लिए कहती है कि जब कोई लड़की भरी सड़क पर रुसवा हो रही होती है, तमाशा देखते लोग, कोई उसकी सहायता के लिए नहीं आता तो उसे स्वयं ही आगे आना होगा, अपनी रक्षा खुद करनी होगी |

स्त्री मां बनकर ही पूर्णता को प्राप्त होती है, माँ बनकर ही स्त्रीत्व महसूस करती हैं | मां बनने का एहसास उसके लिए एक ऐसा एहसास होता है जिसे केवल और केवल एक औरत ही समझ सकती है |खुशी के आंसू जिसमें जब एक माँ अपने बच्चे को पहली बार गोद में लेती है, वो स्पर्श, वो भाव, ममता दुलार, खुशी के आंसू आंखों से झर झर बहने लगते हैं फिर दूध बन कर आशीर्वाद रूप में बच्चे की शिराओं में बहते हैं, वह सुख का एहसास हर स्त्री के लिए बहुत खास होता है | जिसे केवल वही जान सकती है," स्तनपान" वरदान ऐसी ही ममतामयी बहुत प्यारी रचना संदेशपरक भी है |

गृहस्थी की गाड़ी पति और पत्नी दोनों से मिलकर ही चलती है| "जीवनसाथी " उनकी यह कविता इस बात को बखूबी बताती है ....

मैं कहूं कभी
तुम कहो कभी
मैं कहूं कभी तुम सुनो
छोटी सी है जिंदगी
और सपने सुनहरे
कभी मैं बोलूं
कभी तुम बोलो

समझ बूझ और प्यार से एक दूसरे का हाथ पकड़ जीवन में एक दूसरे का आईना बन जिंदगी यूं गुजारते चले जाने को कहती रचना अच्छी बन पड़ी है |

अगर मैं इस कविता की बात नहीं करूंगी तो मेरा कुछ कहना अधूरा रह जाएगा कि "रेगिस्तान में दूब उगानी है" यह सच है कि इस संसार में सुख दुख, अमीर गरीब ,अच्छाई बुराई ,धर्म अधर्म ,का बोलबाला है और हम सब देखते ,सुनते, मजबूर से खड़े केवल दुख मनाते रहते हैं या केवल प्रार्थना ही कर पाते हैं| क्योंकि यह एक कठिन कार्य है , इस संसार से दुख हमेशा के लिए समाप्त हो पाएँ, फिर भी हम सब को यह प्रार्थना करते रहनी चाहिए कि मानवता की जीत हो ,इंसानियत ज़िंदा बची रहे , सबको रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी जरूरतों के लिए मोहताज ना होना पड़े | सच ही तो कहा है कि "रेगिस्तान में दूब उगानी है "

शब्दों को चुनना और फिर लिखना एक मुश्किल कार्य होता है | हम अपनी भावनाओं को बहुत अच्छे तरीके से किस तरह से व्यक्त करें कि वह पढ़ने वाले के हृदय तक पहुंच पाए ,हमें आत्म संतुष्टि प्राप्त हो | कविता भावों का उच्चतम शिखर है जहाँ पहुंचकर बाकी सब चीजें गौण हो जाती हैं| सविता गर्ग "सावी" बहुत ही सरल, सहज, ऊर्जावान, सकारात्मक सोच रखने वाली कवयित्री हैं | उन्होंनें अपने इस काव्य संग्रह "मेरी उड़ान" में अपने मन के भावों को व्यक्त करने की बहुत अच्छी कोशिश की है ,मन और शब्द जब एक हो जाते हैं तब उसके अर्थ नहीं खोजने पढ़ते वो स्वयं हमारे सामने प्रकट हो जाते हैं और हमारी इच्छाएं ,हमारे सपने, भाव सुख -दुख कविता बनकर कोरे कागज पर उतरने लगते हैं | सविता गर्ग को उनके काव्य संग्रह "मेरी उड़ान" की इस ऊंची उड़ान के लिए बहुत-बहुत बधाई, वो यूँ ही लगातार अपना लेखन कार्य करती रहें, मन को शब्दों में पिरो कर गीतों, कविताओं ,भजनों के रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करती रहें और उनकी उड़ान आकाश छूने में एक दिन अवश्य सफल हो ||

शुभकामनाओं सहित

सीमा गुप्ता, कवयित्री, साहित्यकार
पंचकूला (हरियाणा)

अमर हो गए वीर योद्धा पहले सीडीएस बिपिन रावत

सीडीएस बिपिन रावत उत्तराखंड से ताल्लुक रखते थे। रावत पौड़ी जिले के द्वारीखाल ब्लॉक के सैंण गांव के मूल निवासी थे। उनकी पत्नी उत्तरकाशी जिले से थे। हादसे में उनकी मौत होने से राज्य में शोक की लहर व्याप्त है।

सीडीएस बिपिन रावत अपनी पत्नी के साथ तमिलनाडु के कुन्नूर में बुधवार दोपहर को हुए हेलीकॉप्टर हादसे में उत्तराखंड का सूरज डूब गया। भारतीय वायुसेना के एमआई-17 वी फाइव हेलीकॉप्टर में सवार चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) बिपिन रावत व उनकी पत्नी मधुलिका रावत की इस हादसे में दर्दनाक मौत हो गई है। शाम छह बजकर तीन मिनट पर जैसे ही वायुसेना ने ट्वीट कर इस बात की जानकारी दी कि हेलीकाप्टर हादसे में सीडीएस बिपिन रावत व उनकी पत्नी मधुलिका रावत समेत 13 लोगों की मौत हो गई तो हर शख्स स्तब्ध रह गया।

वहीं इस हादसे के बाद से उत्तराखंड में भी हड़कंप मच गया। बिपिन रावत की मौत की खबर आने से राज्य में शोक की लहर है। मौत की खबर सुनते ही गांव में मौजूद उनके चाचा भरत सिंह रावत बिलखकर रोने लगे। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने राज्य में तीन का राजकीय शोक घोषित करने के आदेश दिए। द्वारीखाल ब्लॉक के सैंण गांव के मूल निवासी थे रावत सीडीएस बिपिन रावत उत्तराखंड से ताल्लुक रखते थे। रावत पौड़ी जिले के द्वारीखाल ब्लॉक के सैंण गांव के मूल निवासी थे। उनकी पत्नी उत्तरकाशी जिले से हैं। जानकारी के मुताबिक देहरादून में जनरल बिपिन रावत का घर भी बन रहा था।जनरल बिपिन रावत थलसेना के प्रमुख रहे। रिटायरमेंट से एक दिन पहले बिपिन रावत को देश का पहला चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) बनाया गया था।

इनके पिता लेफ्टिनेंट जनरल लक्ष्मण सिंह रावत सेना से लेफ्टिनेंट जनरल के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। रावत ने 11वीं गोरखा राइफल की पांचवीं बटालियन से 1978 में अपने करियर की शुरुआत की थी। उन्होंने देहरादून में कैंब्रियन हॉल स्कूल, शिमला में सेंट एडवर्ड स्कूल और भारतीय सैन्य अकादमी देहरादून से शिक्षा ली। आईएमए में उन्हें सर्वश्रेष्ठ स्वोर्ड ऑफ ऑनर सम्मान से भी नवाजा गया था। परिवार वालों का कहना है कि उनके परिवार में सभी बच्चों के सामने जनरल बिपिन और उनके पिता का उदाहरण पेश किया जाता था।

जनरल बिपिन रावत के निधन पर भावुक हुए मुख्यमंत्री धामी हेलीकाप्टर दुर्घटना में सीडीएस जनरल बिपिन रावत, उनकी पत्नी मधुलिका रावत व अन्य अधिकारियों की आकस्मिक मृत्यु पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने भावुक संदेश जारी किया। उन्होंने कहा कि एक सैनिक पुत्र होने के नाते वह समझ सकते हैं कि जनरल रावत और अन्य अफसरों के परिवारों के सदस्यों पर क्या बीत रही होगी।

मुख्यमंत्री ने दिवंगत आत्माओं की शांति तथा शोक संतप्त परिजनों को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है। कहा कि

यह हमारे लिए बहुत बड़ा दुख है। एक सैनिक पुत्र होने के नाते वे हमेशा मेरा मार्गदर्शन करते थे। कहा कि मुझे, मेरे पिताजी की रेजीमेंट में उनके साथ जाना था पर नियति को कुछ और मंजूर था।

देश की सुरक्षा के लिए जनरल रावत ने महान योगदान दिया। देश की सीमाओं की सुरक्षा एवं देश की रक्षा के लिए उनके द्वारा लिए गए साहसिक निर्णयों एवं सैन्य बलों के मनोबल को सदैव ऊंचा बनाए रखने के लिए उनके द्वारा दिए गए योगदान को देश सदैव याद रखेगा। सीडीएस जनरल बिपिन रावत की परवरिश उत्तराखंड के छोटे से गांव में हुई।

वह अपनी विलक्षण प्रतिभा, परिश्रम तथा अदम्य साहस एवं शौर्य के बल पर सेना के सर्वोच्च पद पर आसीन हुए तथा देश की सुरक्षा व्यवस्थाओं एवं भारतीय सेना को नई दिशा दी। उनके आकस्मिक निधन से उत्तराखंड को भी बड़ी क्षति हुई है। हम सबको अपने इस महान सपूत पर सदैव गर्व रहेगा।

विज्ञापन

आतंकवाद विरोधी गतिविधियों की खासा जानकारी सीडीएस बिपिन रावत अधिक ऊंचाई वाले स्थान पर युद्ध और आतंकवाद विरोधी गतिविधियों की खासा जानकारी और अनुभव रखते थे। उन्होंने पूर्वी सैक्टर में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर इंफेंट्री बटालियन की कमान संभाली। उन्होंने कश्मीर घाटी में राष्ट्रीय राइफल्स और एक इंफेंट्री डिविजन की कमान संभाली। जनरल रावत ने सेना मुख्यालय की सेना सचिव शाखा में भी महत्वपूर्ण पदों पर काम किया।

वे पूर्वी कमान मुख्यालय में मेजर जनरल, जनरल स्टाफ भी रहे। उन्होंने कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में चैप्टर-7 मिशन में बहुराष्ट्रीय ब्रिगेड की कमान संभाली। लेफ्टिनेंट जनरल बिपिन रावत डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज, वेलिंगटन और हायर कमांड एंड नेशनल डिफेंस कॉलेज कोर्सेज के पूर्व छात्र थे।

उन्हें वीरता और विशिष्ट सेवा के लिए पुरस्कृत भी किया गया, जिनमें यूवाईएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम, एसएम, वीएसएम, सीओएएस प्रशस्ति शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र के साथ काम करते हुए उन्हें दो बार फोर्स कमांडर प्रशस्ति पुरस्कार प्राप्त हुए।

दासता एक अभिशाप- ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

दास प्रथा की शुरुआत कई सदियों पहले हो चुकी थी। ऐसा माना जाता है कि चीन में आठवीं और बारहवीं शताब्दी ईसा पूर्व ""गुलामी प्रथा""का जिक्र मिलता है भारत के प्राचीन ग्रंथ ""मनुस्मृति"" में भी दास प्रथा का उल्लेख किया गया है। कौटिल्य के ""अर्थशास्त्र"" तथा मौर्य सम्राट अशोक के अभिलेखों में प्राचीन भारत में दास प्रथा प्रचलित होने के प्रमाण उपलब्ध हैं।

सल्तनत काल में दास प्रथा का प्रचलन था दासो की संख्या शाही दरबार में बहुत ज्यादा थी अलाउद्दीन खिलजी के समय 50000 दासो की संख्या के प्रमाण ऐतिहासिक पुस्तकों में प्राप्त होते हैं। फिरोजशाह तुगलक के शासन में इनकी संख्या दो लाख के आसपास पहुंच गई उस समय "खान जहां मकबूल" नामक एक दास इतना विलासिता पूर्ण जीवन व्यतीत करता था कि उसके सामने सुल्तानों की भव्यता भी कम थी 15 वी शताब्दी में अफ्रीका के लोग भी इस अनैतिक व्यापार में शामिल हो गए। मुगल काल मे दास प्रथा:-

मुगल काल में भी दास प्रथा तो थी परंतु यह प्रथा सल्तनत काल के मुकाबले कम थी शासकों की भांति सामंत और अमीर लोग भी दास रखने लगे हजारों की संख्या में स्त्रियों को दासियों का जीवन व्यतीत करना पड़ता था मुगल सम्राट अकबर ने सन 1562 में दास प्रथा पर सर्वप्रथम रोक लगाई थी।

राजपूताना में दास प्रथा

राजपूताना में राजा व सामंतों में भी यह प्रथा प्रचलित थी। दास प्रथा पर सर्वप्रथम राजपूताना के प्रमुख इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने लिखा कन्या विवाह पर दहेज के रूप में दासो को भेजा जाता था। जिन्हें "गोला" एवं "गोलियां"कहा जाता था।ईनको जीवन भर अपने स्वामी की गुलामी करनी पड़ती थी वह स्वामी इन को मृत्यु पर्यंत दासता से मुक्त नहीं करता था। राजपूताना में दास एवं दासियों का क्रय विक्रय भी किया जाता था राजघरानों में दासो के लिए एक पृथक विभाग होता था जिसे *""राजलोक"" कहा जाता था। राजपूत शासकों द्वारा कभी-कभी दासियों को उप पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया जाता था जिसे "पडदायत" कहा जाता जब पडदायत को सोने चांदी के आभूषण पहनने की अनुमति मिल जाती थी तो वह ""पासवान""या खवासन"" कहलाती थी।

हिंदुस्तान में लॉर्ड ऐलनबरो ने दास प्रथा का उन्मूलन किया अंग्रेजी साम्राज्य के 1833 का चार्टर अधिनियम में यह प्रावधान था। कि दास प्रथा को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करने के प्रयास किए जाएंगे 1842 में भारत में लार्ड ऐलनबरो गवर्नर जनरल पद पर नियुक्त होकर आया और 1843 में हिंदुस्तान से दासता कोअवैध घोषित कर दिया।

*राजपूताना में दास प्रथा का अंत

राजपूताना में सर्वप्रथम बूंदी महाराव बिष्णु सिंह और कोटा रियासत में 1832 में दास प्रथा पर रोक लगाई उस समय गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बैटिंग के प्रयासों से 1847 में जयपुर सरकार ने एक कानून बनाकर इस प्रथा को गैरकानूनी घोषित कर दिया जोधपुर सरकार ने इस प्रकार का कार्य करने वाले व्यक्तियों को अपराधी घोषित कर दिया और ऐसे व्यक्तियों को 1 वर्ष की जेल एवं ₹200 जुर्माना करने का प्रावधान किया गया। 1863 में उदयपुर सरकार ने भी मानव व्यापार को गैरकानूनी घोषित करते हुए इस पर प्रतिबंध लगा दिया 19वीं शताब्दी के अंत तक इस प्रकार के व्यापार लगभग समाप्त हो गए। भारतीय संविधान में दास प्रथा उन्मूलन हेतु प्रावधान अनुच्छेद 19 (1) (G) के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति को किसी भी वृत्ति, उपजीविका, व्यापार या उनकी पसंद का रोज़गार करने का अधिकार होगा।

अनुच्छेद 21 जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार की गारंटी देता है। बंधुआ मज़दूरी की प्रथा सभी संवैधानिक रूप से अनिवार्य अधिकारों का उल्लंघन करती है। अनुच्छेद 23 मानव के दुर्व्यापार और बलातश्रम का प्रतिषेध करता है। अनुच्छेद 24 कारखानों आदि में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध करता है। अनुच्छेद 39 राज्य द्वारा अनुसरणीय कुछ नीतिगत तत्त्वों का उपबंध करता है अनुच्छेद-42: काम की उचित और मानवीय स्थितियों को सुरक्षित रखने एवं मातृत्व राहत के लिये प्रावधान करने हेतु यह अनुच्छेद राज्य को निर्देशित करता है। अन्य कानूनी प्रावधान:-

(1) अनैतिक दुर्व्यापार (निवारण) अधिनियम 1956
(2) बंधुआ मजदूरी प्रथा (उन्मूलन) अधिनियम 1976
(3) न्यूनतम मजदूरी अधिनियम 1948
(4) संविदा श्रम (नियमन और उन्मूलन) अधिनियम 1970
(5) बाल श्रम (निषेध और नियमन) अधिनियम 1986
(6) भारतीय दंड संहिता की धारा 370

आज हमें समाज में इस प्रथा जो कि अन्य रूपों में प्रचलित है पूर्ण रूप से जागरूक होकर उन्मूलन के लिए प्रयासरत रहना चाहिए

राजेश कुमार मीना
इतिहासकार, राजस्थान

कानपुर के इत्र व्यापारी पर पडी रेड, काबू हुए 200 करोड़ और सोना चांदी

कानपुर में त्रिमूर्ति प्राइवेट लिमिटेड के मालिक पीयूष जैन को गिरफ्तार कर लिया गया है। यह कार्रवाई डीजीजीआई की टीम की ओर से कानपुर और कन्नौज स्थित घर से 200 करोड़ रुपये से अधिक की नकदी और सोना-चांदी मिलने के बाद की गई है। पीयूष जैन के दोनों बेटे फिलहाल टीम की हिरासत में हैं। हालांकि अभी इत्र कारोबारी के घर पर छापेमारी की कार्रवाई जारी है। इंटेलिजेंस की टीम का पीयूष जैन के घर में तलाशी अभियान चल रहा है। सूत्रों के मुताबिक पीयूष जैन के घर में अभी और कैश और सोना-चांदी छिपा हो सकता है। इत्र कारोबारी के घर से इतनी बड़ी मात्रा में कैश और सोना मिला चर्चा का विषय बना हुआ है।

गौरतलब है कि आयकर विभाग ने शुक्रवार को कानपुर में व्यवसायी पीयूष जैन के आवास पर कर छापेमारी में करोड़ों रुपये की नकदी बरामद की थी। इसके बाद टीम ने पीयूष जैन के कन्नौज के ठिकानों पर भी छापेमारी शुरू की तो घरों से नोटों की बंडल निकले शुरू हो गए। इसके बाद डीजीजीआई की टीम कानपुर स्थित मकान पर पहुंच गई। यहां टीम ने जब सर्च ऑपरेशन शुरू किया तो अलमारियों में नोटों के बंडल भरे मिले। टीम को नोट गिनने के लिए पांच मशीने भी मंगानी पड़ीं। कार्रवाई इतनी गोपनीय थी कि इस बारे में डीजीजीआई के लोकल अधिकारियों को भी कुछ नहीं बताया गया था।

सूत्रों के मुताबिक अहमदाबाद की टीम ने लोकल के दो अफसरों से बात की थी। उन्हें बताया गया कि एक ऑपरेशन होना है। इसके लिए बिग बजार चलना है। कानपुर में कई बिग बाजार हैं? कहां पहुंचना है? यह पूछने पर पूछा गया कि कहां-कहां बिग बाजार हैं? जब स्थानीय अधिकारियों ने रावतपुर और परेड के बिग बाजार का नाम लिया तो मना कर दिया गया। दक्षिण कानपुर के बिग बाजार का नाम लेने पर वहीं बुला लिया गया। अधिकारी पहुंचे तो अहमदाबाद की टीम ने उन्हें सीलबंद लिफाफा दिया था। कार में बैठने के बाद लिफाफे खोले गए। उसमें कार्रवाई के लिए दिशा-निर्देश दिए गए थे। इसके बाद टीम ने इत्र कारोबारी के घर पर छापा मारा। छापेमारी तीन तीन से लगातार जारी है।

पीयूष जैन ने कहा था, पैसा मेरा है, 400 किलो पुश्तैनी सोना बेचा पीयूष जैन के कानपुर और कन्नौज स्थित घरों से जब 185 करोड़ रुपये मिले तो अफसरों के भी होश उड़ गए थे। इतने सारे रुपयों के बारे में अफसरों ने इत्र कारोबारी से सवाल किया तो उन्होंने फनी सा जवाब दे दिया था। जिसे सुनकर अफसर भी हंस पड़े थे। पीयूष जैन बोले थे कि ये पैसा उसी का है, जिसे पुश्तैनी सोना बेचकर जमा किया था। सोना क्यों बेचा, किसे बेचा, कितने का बेचा, इन सवालों का जवाब वह नहीं दे सके। दावों की सच्चाई जानने के लिए ही जांच अफसर कन्नौज स्थित उनके घर की तिजोरियों और दीवारों को तोड़ने में लगे रहे।

रविवार सुबह तक दो घरों से मिले थे 185 करोड़ इत्र कारोबारी पीयूष जैन के कानपुर और कन्नौज वाले घरों से करीब 185 करोड़ की नकदी मिल चुकी थी। उधर, डीजीजीआई की टीम ने तीसरे दिन पीयूष जैन को हिरासत में ले लिया गया था। उन्हें लेकर अफसर कन्नौज पहुंचे और पैतृक घर की तलाशी शुरू की तो दीवारों ने नोटों के बंडल और सोना उगलना शुरू कर दिया।

रात 3 बजे घर से निकले, दफ्तर में पूछताछ डीजीजीआई के अफसर कानपुर से शुक्रवार की रात 3 बजे पीयूष जैन को लेकर तीन गाड़ियों से निकले। पहले उन्हें सर्वोदय नगर स्थित डीजीजीआई दफ्तर में लाया गया। सवा घंटे तक पूछताछ के बाद टीम उन्हें लेकर कन्नौज निकल गई। सुबह सात बजे कन्नौज में जैन स्ट्रीट स्थित पीयूष के पैतृक घर में टीम पहुंची। यहां पहले से ही उनके दोनों बेटे प्रत्यूश और प्रियांश मौजूद थे। एक जांच टीम वहां 36 घंटे से तलाशी अभियान में जुटी है। पड़ताल शुरू करने से पहले इलाके के दो लोगों को गवाह के तौर पर शामिल किया गया।

500 चाबियों का रहस्य, अफसर भी नहीं सुलझा पाए इत्र कारोबारी पीयूष जैन ने कन्नौज में अपने घरों की अलमारियों, तिजोरियों और लॉकरों की चाबियां अलग-अलग नहीं रखी थीं बल्कि इसके गुच्छे बना दिए। जांच अफसरों को 500 चाबियां मिलीं लेकिन ताले 109 हैं। साफ है कि घर में अभी गुप्त तिजोरियां हैं, जिनकी तलाश में अभी भी तोड़फोड़ की जा रही है। पीयूष के मकान और कारोबारी ठिकानों पर लगे तालों ने विजिलेंस टीम के अफसरों को बुरी तरह से उलझा बना दिया है। अलग-अलग कमरे, उनमें रखीं दर्जनों अलमारियों और उनके तालों ने सर्दी में भी अफसरों का पसीना छुड़ा दिया है। तालों के न खुलने पर उन्हें तोड़ा और काटा जा रहा है। अब तक एक दर्जन से ज्यादा कारीगरों की मदद ली जा चुकी है।

तीन कृषि कानून रद्द होने पर

हरियाणा के किस नेता ने क्या कहा

तीन कृषि कानूनों के विरोध व अन्य मांगों को लेकर किसान लंबे समय से आंदोलन कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसानों के लंबे संघर्ष के बाद तीनों कृषि कानूनों को वापस लेने की घोषणा कर दी। जिसके बाद सरकार व विपक्ष के नेताओं की प्रतिक्रिया आना भी स्वभाविक था। विपक्ष के नेताओं ने सरकार से किसानों पर दर्ज केस वापस लेने और एमएसपी की गारंटी का कानून लाने की मांग की।

भूपेंद्र सिंह हुड्डा

पूर्व मुख्यमंत्री एवं नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने तीन कृषि कानून वापस लेने के फैसले का स्वागत किया है। उन्होंने इसे किसानों की जीत करार दिया। हुड्डा ने आंदोलनकारी किसानों पर दर्ज सभी मुकदमे वापस लेने की मांग की है। उन्होंने कहा कि सरकार को अब किसान के बाकी बचे अन्य मुद्दों पर भी बातचीत करनी चाहिए। साथ ही कृषि को लाभकारी बनाने की योजनाएं बनाई जाएं। सरकार को ऐसी नीतियां बनानी चाहिए जिससे किसानों के घाटे को कम किया जाए और उन्हें लाभ मिले। आंदोलन के दौरान जान गंवाने वाले किसानों के परिवारों की मदद के लिए सरकार आगे आए। जिस तरह पंजाब सरकार ने पीड़ित परिवारों को आर्थिक मदद और सरकारी नौकरी दी है। उसी तर्ज पर हरियाणा सरकार को भी ऐलान करना चाहिए।

आंदोलन खत्म कर अब घरों को लौटें किसान : मनोहर लाल

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने तीन कृषि कानून वापस लेने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की घोषणा का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि दिल्ली की सीमाओं पर बैठे किसानों से आग्रह है, वे अब आंदोलन को खत्म कर घरों को लौटें। उन्हें अपना धरना तुरंत खत्म करना चाहिए। आंदोलन से आम आदमी को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। अब इस मुद्दे के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाना चाहिए।

एमएसपी पर कानून बनना बेहद जरूरी : अभय

इनेलो विधायक अभय सिंह चौटाला ने कृषि कानूनों की वापस को किसानों की जीत बताया है। उन्होंने कहा कि एमएसपी पर कानून बेहद जरूरी है। अगर एमएसपी पर कानून नहीं बना, तो बड़े उद्योगपति मनमर्जी करेंगे। देश में जब सभी चीजों का रेट तय है तो किसानों की फसल का रेट भी तय होना चाहिए। हर साल महंगाई को देखते हुए किसान की फसल का रेट बढ़ाया जाए। सरकार किसान निधि कोष बनाए। किसान आंदोलन में जान गंवाने वाले किसानों को शहीद का दर्जा देकर परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी दें। किसान आंदोलन के दौरान किसानों पर दर्ज मुकदमे तुरंत प्रभाव से वापस लिए जाएं। ये सभी मांगें वह विधानसभा में भी रखेंगे।

गैर घातक गतिविधि के केस वापस हों : दुष्यंत

हरियाणा के उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने कहा कि नए कृषि कानूनों को वापस लेना सराहनीय है। उन्होंने पीएम नरेंद्र मोदी का आभार जताया। दुष्यंत ने कहा कि किसानों के लंबे संघर्ष को देखते हुए पावन पर्व पर पीएम ने निर्णय लिया। केंद्र सरकार से उम्मीद है कि कृषि की समस्याओं को दूर कर बेहतरी के लिए कदम उठाए जाएंगे। आंदोलन के दौरान दर्ज मुकदमों को वापस करवाने का प्रयास रहेगा। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब में किसानों पर दर्ज गैर घातक गतिविधि के मामले वापस होने चाहिए। किसानों से माफी मांगना प्रधानमंत्री का बड़प्पन है।

केंद्र सरकार ने किसानों पर थोपे थे नए कानून : सैलजा

नए कृषि कानून वापस लेने पर कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष कुमारी सैलजा ने कहा कि भाजपा का असली चेहरा बार-

बार देख चुके हैं। ये सरकार पहले मुद्दे बनाती है, और जब लोग बिल्कुल तंग हो जाते हैं तो उन चीजों को बदल देती है। भाजपा ने कृषि कानून, किसानों व देश के ऊपर थोपे थे। अब जब चुनाव का दौर नजदीक आ गया तो भाजपा ने कानून वापस करने का फैसला ले लिया। यह अन्नदाता और मजदूरों की जीत है। किसानों ने 700 से अधिक अपने भाइयों की जान जाने के बावजूद शांति और संयम का रास्ता नहीं छोड़ा।

कृषि कानूनों की वापसी आंदोलन, लोकतंत्र की जीत : सकसं

सर्व कर्मचारी संघ हरियाणा के प्रदेशाध्यक्ष सुभाष लांबा व महासचिव सतीश सेठी ने कहा कि कृषि कानूनों की वापसी किसानों के ऐतिहासिक आंदोलन व लोकतंत्र की जीत है। किसानों की जीत से श्रम कानूनों को रद्द कर पूंजीपतियों के हकों में बनाए गए चार लेबर कोड्स, नेशनल मुद्रीकरण पाइपलाइन योजना, पुरानी पेंशन बहाली, ठेका प्रथा समाप्त कर कच्चे कर्मियों को पक्का करने आदि मांगों को लेकर चल रहे कर्मचारियों एवं मजदूरों के आंदोलन को बल मिलेगा। प्रधानमंत्री को एमएसपी को कानूनी गारंटी व बिजली संशोधन बिल 2021 को वापस लेने की घोषणा भी करनी चाहिए थी। -

कृषि कानून वापसी किसानों के संघर्ष की जीत : बजरंग

हरियाणा प्रदेश व्यापार मंडल के प्रांतीय अध्यक्ष बजरंग गर्ग ने कृषि कानूनों की वापसी को किसानों के संघर्ष की जीत बताया है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार प्रकट किया। केंद्र सरकार से मांग है कि आंदोलन में जान गंवा चुके किसान परिवारों को उचित मुआवजा व एक सदस्य को सरकारी नौकरी दी जाए। किसान की हर फसल मंडी में आढ़तियों के माध्यम से एमएसपी रेट पर खरीदी जाए। पेट्रोल व डीजल पर एक्साइज ड्यूटी कम करें।

KANCHAN
FOUNDATION
JOIN NOW
मानवसेवा समाजसेवा से जुड़ने के लिए कन्चन फाउंडेशन के सदस्य बने
+91-9215560025

Pardeep Advertisement
M. 8168452610, 9991808974

- Recording Ad.
- Video T.V Ad.
- LED Ad.
- SMS Ad.
- Calling Ad.
- All Type Ad.

Also Contact For Live Shows

अनाऊँसमैन्ट रिकोडिंग
- हिन्दी, पंजाबी, व किसी भी भाषा में स्कूल व हॉस्पिटल
- के प्रचार की रिकोडिंग के लिए सम्पर्क करें ।
- लेडिज आवाज में प्रचार की रिकोर्डिंग का विशेष प्रबन्ध है।
- नए व किराये के लिए लाउडस्पीकर के लिए सम्पर्क करें

Note- हरियाणवी गानों में काम करने के लिए सम्पर्क करें।

अच्छा स्वास्थ्य तथा आयु वृद्धि के लिए करें प्रदोष व्रत

जानिए साल 2022 में आने वाले प्रदोष व्रत

हर माह के शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को प्रदोष व्रत होता है। प्रदोष व्रत के दिन भगवान शिव के साथ उनके परिवार की पूजा की जाती है। प्रदोष व्रत के दिन शिव चालीसा, शिव पुराण और शिव मंत्रों का जाप करना शुभ होता है। साल 2022 में कुल 24 प्रदोष व्रत पड़ेंगे। हिंदू धर्म में प्रदोष व्रत की काफी महिमा मानी गई है। पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान जयपुर जोधपुर के निदेशक ज्योतिषाचार्य डा.अनीष व्यास ने बताया कि नए साल में पहला प्रदोष व्रत 15 जनवरी और साल का आखिरी प्रदोष व्रत 21 दिसंबर को पड़ेगा। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, जो जातक पूरी श्रद्धा के साथ प्रदोष व्रत करते हैं उनके जीवन में यश, धन, वैभव और सुख, शांति बनी रहती है और भक्तों को भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त होता है। पंचांग के अनुसार, वर्ष के प्रत्येक माह के दोनों पक्षों की त्रयोदशी को प्रदोष व्रत मनाया जाता है। इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा-उपासना की जाती है। धार्मिक मान्यता है कि प्रदोष व्रत करने से व्रती के सभी संकटों से मुक्ति मिलती है। साथ ही घर में सुख और समृद्धि आती है।

प्रदोष व्रत से मिलने वाले फल

ज्योतिषाचार्य डा.अनीष व्यास ने बताया कि अलग- अलग दिन के अनुसार प्रदोष व्रत के लाभ प्राप्त होते है। रविवार को पड़ने वाले प्रदोष व्रत से आयु वृद्धि तथा अच्छा स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया जा सकता है। सोमवार के दिन त्रयोदशी पड़ने पर किया जाने वाला व्रत आरोग्य प्रदान करता है और इंसान की सभी इच्छाओं की पूर्ति होती है। मंगलवार के दिन त्रयोदशी का प्रदोष व्रत हो तो उस दिन के व्रत को करने से रोगों से मुक्ति व स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है। बुधवार के दिन प्रदोष व्रत हो तो, उपासक की सभी कामनाओं की पूर्ति होती है। गुरुवार के दिन प्रदोष व्रत पड़े तो इस दिन के व्रत के फल से शत्रुओं का विनाश होता है। शुक्रवार के दिन होने वाला प्रदोष व्रत सौभाग्य और दाम्पत्य जीवन की सुख-शान्ति के लिए किया जाता है। संतान प्राप्ति की कामना हो तो शनिवार के दिन पड़ने वाला प्रदोष व्रत करना चाहिए। अपने उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए जब प्रदोष व्रत किए जाते हैं तो व्रत से मिलने वाले फलों में वृद्धि होती है।

प्रदोष व्रत 2022

पौष, शुक्ल त्रयोदशी शनिवार 15 जनवरी प्रदोष व्रत
माघ, कृष्ण त्रयोदशी रविवार 30 जनवरी प्रदोष व्रत
माघ, शुक्ल त्रयोदशी सोमवार 14 फरवरी प्रदोष व्रत
फाल्गुन, कृष्ण त्रयोदशी सोमवार 28 फरवरी प्रदोष व्रत
फाल्गुन, शुक्ल त्रयोदशी मंगलवार 15 मार्च प्रदोष व्रत
चैत्र, कृष्ण त्रयोदशी मंगलवार 29 मार्च प्रदोष व्रत
चैत्र, शुक्ल त्रयोदशी बृहस्पतिवार 14 अप्रैल प्रदोष व्रत
वैशाख, कृष्ण त्रयोदशी बृहस्पतिवार 28 अप्रैल प्रदोष व्रत
वैशाख, शुक्ल त्रयोदशी शुक्रवार 13 मई प्रदोष व्रत
ज्येष्ठ, कृष्ण त्रयोदशी शुक्रवार 27 मई प्रदोष व्रत
ज्येष्ठ, शुक्ल त्रयोदशी रविवार 12 जून प्रदोष व्रत
आषाढ़, कृष्ण त्रयोदशी रविवार 26 जून प्रदोष व्रत
आषाढ़, शुक्ल त्रयोदशी सोमवार 11 जुलाई प्रदोष व्रत
श्रावण, कृष्ण त्रयोदशी सोमवार 25 जुलाई प्रदोष व्रत
श्रावण, शुक्ल त्रयोदशी मंगलवार 9 अगस्त प्रदोष व्रत
भाद्रपद, कृष्ण त्रयोदशी बुधवार 24 अगस्त प्रदोष व्रत
भाद्रपद, शुक्ल त्रयोदशी गुरुवार 8 सितंबर प्रदोष व्रत
आश्विन, कृष्ण त्रयोदशी शुक्रवार 23 सितंबर प्रदोष व्रत
आश्विन, शुक्ल त्रयोदशी शुक्रवार 7 अक्टूबर प्रदोष व्रत
कार्तिक, कृष्ण त्रयोदशी शनिवार 22 अक्टूबर प्रदोष व्रत
कार्तिक, शुक्ल त्रयोदशी शनिवार 5 नवम्बर प्रदोष व्रत
मार्गशीर्ष, कृष्ण त्रयोदशी सोमवार 21 नवम्बर प्रदोष व्रत
मार्गशीर्ष, शुक्ल त्रयोदशी सोमवार 5 दिसंबर प्रदोष व्रत
मार्गशीर्ष, कृष्ण त्रयोदशी बुधवार 21 दिसंबर प्रदोष व्रत

प्रदोष व्रत की विधि

विश्वविख्यात भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा.अनीष व्यास ने बताया कि प्रदोष व्रत करने के लिए मनुष्य को त्रयोदशी के दिन प्रात: सूर्य उदय से पूर्व उठना चाहिए। नित्यकर्मों से निवृत होकर, भगवान श्री भोले नाथ का स्मरण करें। इस व्रत में आहार नहीं लिया जाता है। पूरे दिन उपावस रखने के बाद सूर्यास्त से एक घंटा पहले, स्नान आदि कर श्वेत वस्त्र धारण किए जाते हैं।पूजन स्थल को गंगाजल या स्वच्छ जल से शुद्ध करने के बाद, गाय के गोबर से लीपकर, मंडप तैयार किया जाता

है। अब इस मंडप में पांच रंगों का उपयोग करते हुए रंगोली बनाई जाती है। प्रदोष व्रत कि आराधना करने के लिए कुशा के आसन का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार पूजन की तैयारियां करके उत्तर-पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठे और भगवान शंकर का पूजन करना चाहिए। पूजन में भगवान शिव के मंत्र 'ऊँ नम: शिवाय' का जाप करते हुए शिव को जल चढ़ाना चाहिए।

प्रदोष व्रत कथा

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा.अनीष व्यास ने बताया कि एक नगर में तीन मित्र राजकुमार, ब्राह्मण कुमार और तीसरा धनिक पुत्र रहते थे। राजकुमार और ब्राह्मण कुमार विवाहित थे, धनिक पुत्र का भी विवाह हो गया था, लेकिन गौना होना बाकी था। एक दिन तीनों मित्र स्त्रियों की चर्चा कर रहे थे। ब्राह्मण कुमार ने स्त्रियों की प्रशंसा करते हुए कहा- 'नारीहीन घर भूतों का डेरा होता है।' धनिक पुत्र ने यह सुना तो तुरन्त ही अपनी पत्नी को लाने का फैसला ले लिया। तब धनिक पुत्र के माता-पिता ने समझाया कि अभी शुक्र देवता डूबे हुए हैं, ऐसे में बहू-बेटियों को उनके घर से विदा करवा लाना शुभ नहीं माना जाता, लेकिन धनिक पुत्र ने एक नहीं सुनी और ससुराल पहुंच गया। ससुराल में भी उसे मनाने की कोशिश की गई लेकिन वो नहीं माना। कन्या के माता-पिता को अपनी बेटी की विदाई करनी पड़ी। विदाई के बाद पति-पत्नी शहर से निकले ही थे कि बैलगाड़ी का पहिया निकल गया और बैल की टांग टूट गई। दोनों को चोट लगी लेकिन फिर भी वो चलते रहे। कुछ दूर जाने पर डाकू उनका धन लूटकर ले गए। दोनों घर पहुंचे. वहां धनिक पुत्र को सांप ने डस लिया। उसके पिता ने वैद्य को बुलाया तो वैद्य ने बताया कि वो तीन दिन में मर जाएगा। जब ब्राह्मण कुमार को यह खबर मिली तो वो धनिक पुत्र के घर पहुंचा और उसके माता-पिता को शुक्र प्रदोष व्रत करने की सलाह दी। और कहा कि इसे पत्नी सहित वापस ससुराल भेज दें। धनिक ने ब्राह्मण कुमार की बात मानी और ससुराल पहुंच गया। धीरे-धीरे उसकी हालात ठीक हो गई और धन-सपंदा में कोई कमी नहीं रही।

डा. अनीष व्यास
विश्वविख्यात भविष्यवक्ता एवं कुण्डली विश्लेषक
पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान
जयपुर जोधपुर
Ph.- 9460872809

यूपी में आज कांग्रेस वैसी ही 'अछूत', जैसे कभी भाजपा हुआ करती थी

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी और समाजवादी पार्टी की सियासी ताकत के सामने कांग्रेस काफी 'बौनी' नजर आ रही है। कांग्रेस की यूपी प्रभारी प्रियंका वाड्रा की तमाम कोशिशों के बाद भी जमीन से जुड़ा आम कांग्रेसी उत्साहित नहीं नजर आ रहा है। इसकी वजह है पिछले कई चुनावों से कांग्रेस का लगातार गिरता हुआ जनाधार।इसीलिए पुराने कांग्रेसी दिग्गजों का लगता है कि यूपी में कांग्रेस जब तक पुनः मजबूत स्थिति में न आ जाए तब तक वह गठबंधन की सियासत से परहेज नहीं करे।कांग्रेसी ही नहीं कांग्रेस के रणनीतिकार प्रशांत किशोर भी चाहते हैं कि कांग्रेस एकला चलो की राह पकड़ने की बजाए गठबंधन की राह पकड़ कर चले,लेकिन कांग्रेस की मजबूरी यह है कि यूपी में कांग्रेस आज वैसे ही अछूत हो गई है,जैसे कभी भाजपा हुआ करती थी। कोई भी उससे हाथ मिलाने को तैयार नहीं है। बड़े दलों की बात छोड़िए छोटे-छोटे दल भी कांग्रेस से दूरी बनाकर चल रहे हैं।ऐसे में कांग्रेस को थोड़ी-बहुत उम्मीद बसपा से बची थी। बसपा इस समय सियासी रूप से काफी कमजोर नजर आ रही है। उसके नेता एक-एक कर पार्टी छोड़ते जा रहे हैं,लेकिन दलित वोटरों की आज भी पहली पसंद बसपा ही है। कांग्रेस को लग रहा था कि हासिए पर नजर आ रही बसपा उसके साथ गठबंधन का प्रस्ताव मान लेगी,इससे दोनों को ही फायदा होगा,लेकिन बसपा सुप्रीमों ने कांग्रेस को आड़े हाथ लेते हुए कांग्रेस की मुहिम की चाहट को ठेंगा दिखा दिया है। बसपा किसी भी सूरत में यूपी में कांग्रेस के साथ आने को तैयार नहीं है। इसके लिए बीएसपी नेता जहां पुराने अनुभव को सामने रख रहे है,वहीं अहम रोड़ा पंजाब विधान सभा के चुनाव भी बने हुए है,जिसमें कांग्रेस और बसपा आमने-सामने हैं। यूपी में बसपा यदि कांग्रेस से हाथ मिलाती है तो इसका खामियाजा उसे पंजाब में भुगतना पड़ सकता है।

वैसे राजनीति के कुछ जानकार अभी इस नतीजे पर नहीं पहुंचना चाहते हैं कि कांग्रेस-बसपा गठबंधन किसी भी सूरत में नहीं हो सकता है।यह लोग कह रहे हैं कि यूपी विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और बहुजन समाज पार्टी के चुनाव पूर्व गठबंधन की संभावनाएं अभी ख़त्म नहीं हुई है।कांग्रेस के लिए संकटमोचक की भूमिका निभा रहे प्रशांत किशोर को बसपा के साथ गठबंधन हेतु कुटनीतिक मुहिम चलाने की जिम्मेदारी भी सौंपी गई है। पुराने कांग्रेसी और पार्टी के सचिव भक्त चरण दास ने साफ़ तौर पर कहा है कि हम बसपा के साथ गठबंधन की संभावना पर खुले मन से काम कर रहे हैं। उधर बसपा के अंदरूनी सूत्रों का भी कहना है कि मायावती किसी भी पार्टी से गठबंधन न करने के अपने फैसले पर पुनर्विचार कर रही है,कांग्रेस के साथ चुनाव पूर्व गठबंधन को लेकर अंतिम तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता ,लेकिन यह तय है कि अगर बसपा को चुनाव पूर्व या चुनाव के बाद गठबंधन की जरुरत पड़ी तो वो कांग्रेस के साथ जायेगी।

बहरहाल,बसपा सुप्रीमो मायावती ,अगर कांग्रेस के साथ चुनाव पूर्व गठबंधन को लेकर उलझन में हैं तो इसके पीछे कई कारण हैं। चुनाव पूर्व सर्वेक्षण के नतीजों से आश्वस्त बसपा को लगता है कि यूपी में अगले वर्ष होने वाले विधानसभा चुनाव में उन्हें स्पष्ट बहुमत मिलेगा ,वहीँ साथ में मायावती समेत पार्टी के कुछ वरिष्ठ नेताओं को इस बात का डर भी है कि नितीश कुमार के महागठबंधन और ओवैसी की पार्टी के चुनाव मैदान में उतरने से कई सीटों पर मुकाबला बहुकोणीय हो सकता है और अगर ऐसा हुआ तो उसका सबसे ज्यादा नुकसान बसपा को होगा । बात कांग्रेस की कि जाए तो कांग्रेस की मौजूदा रणनीति यूपी में अधिकतम 100 सीटों को हासिल करने की है। भले ही पार्टी सवर्ण सीएम की बात कहकर प्रदेश के सवर्णों के वोटबैंक पर कब्जे का मंसूबा बनाती दिख रही हो ,लेकिन हकीकत यह है कि कांग्रेस के लिए सबसे बड़ी चुनौती यूपी में अपने दो दशक पुराने मुस्लिम और दलित वोट बैंक को हासिल करना है।इन दोनों में मुस्लिम वोट बैंक पर कब्ज़ा पाना पार्टी के लिए ज्यादा आसान है क्यूंकि यूपी में अखिलेश राज में हुए दंगों और समाजवादी पार्टी की कथित वादा खिलाफी की वजह से प्रदेश के मुस्लिम बेहतर विकल्प ढूंढ रहे हैं।ऐसे में उनके पास कांग्रेस और ओवैसी की पार्टी के अलावा कोई तीसरा विकल्प नहीं है।अगर बसपा कांग्रेस का गठबंधन होता है तो बसपा को उन सीटों पर सीधा लाभ मिल सकता है जहाँ वो मुस्लिम वोटों के एकतरफा सपा के पक्ष में पड़ने की वजह से हारती रही है। वहीँ दूसरी तरफ सुरक्षित सीटों पर कांग्रेस के पक्ष में दलित वोटों के शिफ्ट होने की समस्या भी ख़त्म हो जाएगी। कांग्रेस-बसपा गठबंधन न होने का बड़ा कारण है पंजाब विधानसभा चुनाव जो यूपी के साथ ही होने जा रहा है। वहां बसपा का शिरोमणि अकाली दल के साथ गठबंधन है। 117 सीटों में से शिरोमणि अकाली दल ने 20 सीटें बसपा को दी हैं। इन सभी सीटों पर बसपा का सीधा मुकाबला कांग्रेस से हैं। इनमें से 18 सीटों पर तो हाल में

कांग्रेस के ही विधायक हैं। हालांकि, सीटों के बंटवारे को लेकर पंजाब में भी असंतोष है। कुछ बसपाई कह रहे हैं कि अकाली दल ने ऐसी सीटें बसपा को दी हैं, जिनपर बसपा का जनाधार कम है। इनमें पचास प्रतिशत सीटों पर तो उसका काडर वोटर बेहद कम है।

बसपा सुप्रीमों मायावती कांग्रेस के गठबंधन के आफर को क्यों महत्व नहीं दे रही हैं। इसकी गहराई में जाया जाए तो पता चलता है कि कांग्रेस पिछले कुछ महीनों से जिस तरह की सियासत कर रही है,उससे मायावती काफी नाराज चल रही हैं। इनमें सबसे अहम कारण कांग्रेस द्वारा पंजाब में दलित नेता चरणजीत सिंह चन्नी को मुख्यमंत्री बनाना है।पंजाब में कांग्रेस ने वहां बड़ा दलित कार्ड खेला जबकि वहां कांग्रेस व बसपा आमने-सामने हैं। इतना ही नहीं, लखीमपुर खीरी में चन्नी की जबरदस्त आमद कराई गई और उन्होंने यहां तिकुनिया प्रकरण के पीड़ित किसानों को 50-50 लाख रुपये की आर्थिक सहायता दी। बसपा मानकर चल रही है कि कांग्रेस का यह निशाना पूरी तरह से बसपा के काडर वोटर को साधने के लिए है। इसी तरह से मार्च 2019 में प्रियंका गांधी अचानक भीम आर्मी के मुखिया चंद्रशेखर आजाद से मिलने अस्पताल पहुंच गई थीं। दरअसल चंद्रशेखर 'बहुजन अधिकार याता' निकाल रहे थे। अचानक तबीयत खराब होने पर उन्हें मेरठ के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहां अचानक प्रियंका गांधी तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष राजबब्बर व तत्कालीन पश्चिमी यूपी प्रभारी ज्योतिरादित्य सिंधिया को साथ लेकर उनसे मिलने पहुंच गईं और कहा कि चंद्रशेखर का संघर्ष उन्हें पसंद आया। बसपा मानकर चल रही है कि चंद्रशेखर से उनकी यह मुलाकात अनायास नहीं बल्कि बसपा के खिलाफ सुनियोजित थी। इसके अलावा बसपा की निगाह इस विधानसभा चुनाव के साथ-साथ वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव पर भी है। बसपा थिंक टैंक को लग रहा है कि इस चुनाव में यदि कांग्रेस से हाथ मिलाया गया तो इसके दूरगामी प्रतिकूल परिणाम हो सकते हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव में कहीं उसका काडर वोटर उससे छिटक न जाए क्योंकि भाजपा भी पूरी तरह से उसके वोटर को रिझाने की कोशिश में है। ऐसे में उसको नुकसान हो सकता है।

संजय सक्सेना,लखनऊ
स्वतंत्र पत्रकार

DURGA MOTORS

हमारे यहां पर
TATA Ace, Max,
पिकअप, करूजर,
Tata 407,1109,
आयसर 10.59,11.10 व
भारतबैंज गाड़ियों का
स्पेयर पार्ट व डैंटर-पेंटर,
इलेक्ट्रिशियन और
मैकेनिक उपलब्ध है।

मोनू डेंटर 99966-60516
प्रमोद मिस्त्री 94663-46460
रिंकू ड्राइडेंटर 90535-43758
प्रवीण इलेक्ट्रीशियन 99923-08190

M.9215560025, 9215725425 नई अनाज मंडी गेट के सामने, सफीदों (जींद)

बेटियों की शादी की उम्र 21 साल होने पर क्या पड़ेगा सामाजिक फर्क है

केंद्र सरकार ने महिलाओं की शादी की उम्र बढ़ाने का फैसला किया है. अभी ये उम्र 18 साल है, जिसे बढ़ाकर 21 साल किए जाने का प्रस्ताव है. अगर ये कानून बन जाता है तो फिर भारत उन चंद देशों में शुमार हो जाएगा, जहां महिलाओं की शादी की उम्र 21 साल है. ऐसे सवाल उठ रहा है कि सरकार के इस फैसले का सामाजिक असर क्या होगा, क्या यूपी चुनाव में सरकार को फायदा मिलेगा, क्या शादी की उम्र बढ़ाने से ग्रेजुएट की संख्या बढ़ेगी? इन्हीं सभी सवालों के जवाब हम यहां दे रहे हैं.

कमेटी की रिपोर्ट में क्या है?

जया जेटली की अध्यक्षता में बनी एक टास्क फोर्स ने सरकार को अपनी रिपोर्ट दी है. ये सिफारिशें दिसंबर 2020 में की गई थीं. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की ओर से जून 2020 में ये टास्क फोर्स बनाई गई थी, जिसमें नीति आयोग के सदस्यों को भी शामिल किया गया था. इसी टास्क फोर्स की सिफारिश है कि लड़की की शादी की उम्र 18 से बढ़ाकर 21 साल कर देनी चाहिए. क्योंकि छोटी उम्र में लड़कियों को प्रेगनेंसी में समस्याएं होती हैं, मातृ मृत्यु दर बढ़ने की आशंका रहती है, पोषण के स्तर में भी सुधार की जरूरत होती है, टीनएज में लड़की अपने फैसले भी नहीं ले पाती, छोटी उम्र में शादी का असर लड़कियों की पढ़ाई पर भी पड़ता है.

क्यों जरूरी है 21 में लड़कियों की शादी?

फरीदाबाद में फोर्टिस अस्पताल की डॉ. इंदु तनेजा का कहना है कि इससे टीनएज मैरिज बंद होगी. प्रेगनेंसी की एज भी 21 के बाद ही होगी. टीनएज प्रेगन्नेंसी को बहुत हाई रिस्क प्रेगनेंसी मानते हैं. जैसा कि मदर का हाई ब्लड प्रेशर होता है. जिसमें मां और बच्चा दोनों पर बुरा असर पड़ता है. एनिमिया होता है. ब्लीडिंग ज्यादा होता है. ये कॉम्पलिकेशन कम हो जाएंगे.

समय के साथ बदलती रही लड़कियों की शादी की उम्र

ये तो स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हैं, लेकिन इस फैसले के पीछे एक बड़ी वजह लड़का-लड़की के भेद को कम करना भी है. ये कदम बराबरी का दर्जा होगा. वैसे भी बदलते भारत में लड़कियों की शादी की उम्र भी बदलती रही है. सबसे पहले साल 1929 में शारदा एक्ट में लड़कियों की शादी की उम्र 14 और लड़कों की 18 साल तय हुई थी. 1954 के द स्पेशल मैरिज एक्ट में सुझाव दिया गया कि लड़कों की शादी की उम्र 21 और लड़कियों की 18 की जाए. लेकिन ये सुझाव 1978 में जाकर माना गया, फिर शारदा एक्ट में संशोधन करके लड़कों की शादी की उम्र 21 साल और लड़कियों की 18 साल की गई और अभी तक देश में लड़का लड़की की शादी की उम्र यही थी.

ये कदम बाल विवाह को भी रोकने के काम आएगा क्योंकि अभी 14-15 साल की लड़कियों को 18 का बताकर उनकी शादी कर दी जाती है. लेकिन अब ऐसे केस बहुत हद तक रुक जाएंगे.

बाल विवाह से कितना नुकसान?

आपको जानकर हैरानी होगी कि बाल विवाह से देश को 3.49 लाख करोड़ रुपये का नुकसान होता है. देश में अभी भी 23.3 फीसदी महिलाओं की शादी 18 से कम उम्र में होती है. 15 से 19 साल के बीच में 6.8 फीसदी महिलाएं या तो गर्भवती हैं या मां बन चुकी हैं. बाल विवाह रोकने के अलावा लड़कियों का स्कूल ड्रॉप आउट रेट भी कम होगा क्योंकि अभी कम उम्र में शादी की वजह से लड़कियों को स्कूल छोड़ना पड़ता है.

एक आंकड़े के अनुसार, क्लास 1 से 5वीं तक सिर्फ 1.2 फीसदी लड़कियां स्कूल छोड़ती हैं. कक्षा 6 से 8वीं तक ये स्कूल छोड़ने वाली लड़कियां 2.6 फीसदी हैं. जबकि 9वीं से 10 में स्कूल छोड़ने वाली लड़कियों की संख्या 15.1 फीसदी हैं.

महिला अधिकार एक्टिविस्ट रंजना कुमारी का कहना है कि शादी की उम्र बढ़ने से लड़कियां कम से कम पढ़ाई पूरी कर पाएंगी. कोई मतलब नहीं है उस तरह की पढ़ाई का. बीए, एमए पास करेंगी. अपने पैर पर खड़ी हो जाएंगी. अपना परिवार अच्छा चला सकती हैं और अपने बारे में अच्छा फैसला कर सकती हैं. बहुत कम उम्र में लड़कियां मां बनती हैं.

महिला सांसदों ने सरकार के फैसले का किया स्वागत

सरकार के इस फैसले का महिला सांसदों ने भी स्वागत किया है. बीजेपी सांसद रीता बहुगुणा जोशी ने कहा, 'टेंडेंसी होती है कि 16 की हो गई, लड़का खोजना शुरू कर दो. तो लड़की पढ़ नहीं पढ़ पाती है. शिक्षित परिवार लड़कियों को पढ़ा रहे हैं. तो 24-25 एज हो गई है. ये स्वागत योग्य कदम है. उम्र ठीक होगी, तो स्वास्थ्य भी ठीक होगा. बीजेपी सांसद रमा देवी ने कहा, 'सब स्वावलंबी बनें, अपने पैर खड़ा हों. पढ़ाई लिखाई करके शादी करें. वही झगड़ा वही झंझट वही तिलक दहेज लेना. अपने पैर पर खड़ा होगी, तो उसका बाल बच्चा भी पढ़ेगा लिखेगा.'

क्या बीजेपी को यूपी के चुनाव में मिलेगा फायदा?

जानकार ये भी मानते हैं कि इससे बीजेपी को उत्तर प्रदेश के चुनावों में फायदा मिल सकता है. वरिष्ठ पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक योगेश मिश्रा का कहना है कि वोट बैंक अच्छा बने या ना बने लेकिन आधी आबादी में खुशी की लहर तो होगी है. आधी आबादी में अपनी प्रेजेंस भारतीय जनता पार्टी ने एक नए ढंग से फिर से करा ली है. यूपी में चुनाव नजदीक हैं, इसलिए फायदे की बात की जा रही है लेकिन हकीकत ये है कि ये सभी के फायदे का फैसला है.

"ए मेरे मायूस मन"

ए मेरे मासूम मन .
देख खुशबू का चमन।
फूल कलियों के नयन से.
सोख ले असुवन॥

देख सूरज आ गया है
फिर तेरे आंगन.
रौशनी की झालरो से
बांध ले बंधन।
तू सजा सपने सजीले
आ गए है दिन .
गीत गाओ अब सुरीले
छा गए हैं दिन।
दिन ढलेगा रात होगी
प्यार की बरसात होगी
बर्फ अग्निवन॥

इस नए संसार में
बिरवा लगा ले.
दे उसे भी परवरिश
उत्तम दिशा दे।

भावना के भाव का
करना सदा सत्कार.
वृक्ष बनकर छांव का
तू बांटना उपहार।
ये मधुर अनमोल बोली.
हो दीवाली या कि होली।
प्रेम है चुम्बन॥

अब गुफ़ा से तू निकल कर
आ उजालों में.
और अंधेरा चीर प्रश्नों का
सवालों में।
आंख बोलेंगी किसी के
प्यार की भाषा.
कर यही एहसास दिल में
भर नई आशा।
राम और रहमान मिल कर.
हंसते हो जब साथ खिल कर।
त्याग कर अनबन॥

वीरेंद्र" मधुर"
गीतकार कवि , रोहतक(हरियाणा)

दुर्गा क्रेन सर्विस

Rahul Paul 9813522218
Mukesh Paul 8950002221 8950005551
Vinod Paul 9996310076
Vishal paul 8397902221 9813489334

Deals in : लोडिंग, अनलोडिंग , लिफ्टिंग, शिफ्टिंग

पता - कुटेल, करनाल, (हरियाणा)

'भारतीयता की वास्तविक मूर्ति हैं प्रेमचंद'

(डॉ. कमल किशोर गोयनका से दिनेश शर्मा की बातचीत)

श्री कमल किशोर गोयनका का जन्म उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर में 11 अक्टूबर, 1938 हुआ। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद पर पीएच.डी. एवं डी.लिट् करने वाले श्री गोयनका को देश-विदेश में 'प्रेमचंद स्कॉलर' कहकर पुकारा जाता है। इनकी अभी तक प्रेमचंद पर 35 पुस्तक सहित 80 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। श्री गोयनका के 350 से अधिक लेख, शोध-पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने प्रेमचंद के मूल दस्तावेज़, पत्र, डायरी, बैंक पास-बुक, फोटोग्राफ़, पाण्डुलिपि आदि दुर्लभ सामग्री का संग्रहण किया है। हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा आजीवन साहित्य साधना सम्मान से सम्मानित श्री गोयनका को हिंदी अकादमी (दिल्ली), भारतीय भाषा परिषद (कोलकाता), उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी, केंद्रीय हिंदी संस्थान (आगरा), व्यास सम्मान, हिन्दी प्रचारिणी सभा (मॉरिशस) द्वारा भी पुरस्कृत और सम्मानित किया गया है।

गोयनका जी, अभिनंदन! 'प्रेमचंद स्कॉलर' कहा जाता है; इस पर क्या कहना चाहेंगे?

दिनेश, धन्यवाद। देखिए! प्रेमचंद मेरे अध्ययन और अनुसंधान का मूल विषय है। मैं पहला भारतीय शोधकर्मी हूं जिसने पी.एच.डी. तथा डी. लिट् के दोनों उपाधियां प्रेमचंद के जीवन,चिंतन और साहित्य पर प्राप्त की है। निश्चय ही विश्व का पहला ऐसा अकेला लेखक हूं जिसकी एक लेखक 'प्रेमचंद' पर ही अब तक 35 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। वैसे मैंने इसे 'गिनीज बुक्स ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में दर्ज कराने की कोई कोशिश नहीं की। प्रेमचंद पर मैंने आधी शताब्दी दे दी। 1500 पृष्ठों का अज्ञात-अप्राप्य साहित्य खोजा, उनके मूल दस्तावेजों का संग्रह किया, उनकी जन्म-शताब्दी पर राष्ट्रीय समिति बनाई और देश-विदेश में कार्यक्रम कराये। कई दर्जन पत्रिकाओं के प्रेमचंद विशेषांक निकलवाये। मॉरीशस, दिल्ली तथा कई नगरों में प्रेमचंद प्रदर्शनी लगाई, प्रेमचंद पर डाक टिकट निकलवाया और अब तक लगभग 300 लेख लिखे। इनके साथ प्रेमचंद की जो मार्क्सवादी मूर्ति बनाई गई थी, उसकी पूर्ण बुनियाद की कलाई खोली और प्रेमचंद की भारतीयता की वास्तविक मूर्ति की स्थापना की और स्वागत किया के यथार्थ और आदर्श मिलकर ही प्रेमचंद बनते हैं। उनका यथार्थ 'अमंगलकारी' है और आदर्श 'मंगलकारी' और यही प्रेमचंद है- 'मंगल भवन अमंगल हारी।' यही कारण है कि देश-विदेश में मेरी ख्याति 'प्रेमचंद स्कॉलर' के रूप में ही है और इससे मुझे संतोष है। हालांकि प्रेमचंद के अतिरिक्त भी मेरी लगभग 35 और पुस्तकें भी है जो प्रवासी साहित्य, संस्मरण, साक्षात्कार, रचनावली, प्रतिनिधि संचयन, लघुकथा, पत्र, कोश, गांधी आदि पर हैं।

गोयनका जी, आप हिंदी शोध और आलोचना का भविष्य क्या मानते हैं?

देखिए, साहित्य भावना और विचार का संगम है और शोध एवं आलोचना तथ्य एवं उनके वैचारिक विवेचन का। मेरा क्षेत्र आलोचना और शोध है और शोध आलोचना का ही अंग है। हिंदी आलोचना तथा शोध कर्म इसी बुनियाद पर अपने समाज के लिए उपयोगी हो सकता है और साथ ही विरोधी विचारों के साथ संवाद भी करते रहना होगा। हिंदी आलोचना का यही भविष्य है मेरा साहित्यिक जीवन तो इसी रूप में व्यतीत हुआ है और अब तक मेरी मूल विद्या आलोचना और शोध कर्म है। जब तक साहित्य रचा जाता रहेगा और साहित्य के अध्ययन अध्यापन की प्रवृत्ति रहेगी तब तक आलोचना और साहित्यिक शोध भी बना रहेगा। साहित्य के साथ आलोचना का अटूट संबंध है और हमेशा रहेगा।

गोयनका जी, आप शोध के उद्देश्यों की पूर्ति में स्वयं को कितना सफल मानते हैं ?

दिनेश, साहित्य के शोध के उद्देश्य की सफलता विज्ञान के उद्देश्य की सफलता से भिन्न होती है। विज्ञान में शोध से नए आविष्कार होते हैं और वे संपूर्ण मानव जाति को प्रभावित करते हैं, लेकिन साहित्य में शोध से अनेक वैचारिक धारणाएं बदलती हैं, परंतु पूर्व घटनाओं के प्रति दुर्गुण बने रहते हैं। हिंदी का साहित्य तथा शोध संसार की मानसिकता इसी से समझी जा सकती है कि हिंदी में अभी तक 30000 शोध प्रबंध लिखे गए हैं, किंतु उनके शोध उपलब्धियों को कितने प्रोफेसर तथा कितने छात्र जानते हैं? मेरे प्रेमचंद संबंधी शोध पर नकारात्मक एवं सकारात्मक चर्चाएं खूब हुई। मेरे शोध पर अनेक प्रतिष्ठित लेखकों ने लिखा भी और शोध निष्कर्ष प्रेमचंद प्रेमी जनता तक भी पहुंचे; विदेशी विश्वविद्यालयों तक

में भी पहचाने गए। कुछ विश्वविद्यालयों के प्रगतिशील प्रोफेसरों तथा आलोचकों ने उनका पूर्णत: बहिष्कार ही नहीं किया बल्कि निंदा-अपमान आदि का आंदोलन भी चलाया। इस प्रकार यह खुद की वैज्ञानिक चेतना के अनुयायी वैज्ञानिक शोध के शत्रु बन गए। मुझे विश्वास है अवरोध खत्म हो रहे हैं और भविष्य में जब भी प्रेमचंद पढ़े या पढ़ाए जाएंगे तो प्रेमचंद पर मेरा कार्य अवश्य ही उनके सामने होगा।

आप अपने लेखन कार्य की क्या विशेषताएं हैं?

देखिए, हिंदी आलोचना में शोध को व्यापकता से जोड़ना तथा आलोचना को शोधाश्रित बनाने में मैंने प्रमुख कार्य है जो स्वतंत्रता के बाद इतने व्यापक एवं गंभीरता के साथ किसी और ने नहीं किया। हिंदी में अधिकांश शोध प्रबंध पी.एच.डी. की उपाधि के लिए लिखे गए और डिग्री मिलने के बाद उस विषय पर निरंतर शोध करते हुए आलोचना को और अधिक पुष्ट एवं वैज्ञानिक बनाने का कार्य मुझे अन्यत्र दिखाई नहीं देता। शोध निरंतर साधना चाहता है और साहित्य में भी यह प्रक्रिया चल सकती है। मैंने शोध कार्य को जीवन की आधी शताब्दी दी है और ऐसा कोई दूसरा उदाहरण हिंदी में नहीं है।

गोयनका जी, आपके मनपसंद साहित्यकार कौन-कौन हैं जिनके लेखन ने आपको प्रभावित किया?

दिनेश, साहित्य संसार समुद्र है। कोई भी संपूर्ण साहित्य नहीं पढ़ सकता। पर आधुनिक युग में भारतेंदु, प्रेमचंद्र ,जैनेंद्र, अज्ञेय, चतुरसेन शास्त्री, वृंदावन लाल वर्मा, शिवानी, रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, दया प्रकाश सिन्हा, रेनू, चित्रा मुद्गल आदि तथा प्रवासी साहित्य में अभिमन्यु अनत, हरिशंकर आदेश, सुधाओम ढींगरा, अनिल प्रभा कुमार, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, उषाराजे सक्सेना, दिव्या माथुर, उषा वर्मा, गौतम सचदेव, कृष्ण कुमार, पदमेवा गुप्त, कादंबनी मेहरा, पुष्पिता अवस्थी, अर्चना पैन्यूली, रेखा राजवंशी, रेनू गुप्ता राजवंशी, कृष्ण बिहारी, लक्ष्मीधर मालवीय आदि मेरे प्रिय साहित्यकार हैं।

गोयनका जी, वर्तमान संदर्भ में साहित्य की सार्थकता पर क्या कहेंगे?

दिनेश, साहित्य और कला जीवन के विकास के साथ-साथ जन्म लिया है और आज के मानवीय जीवन के लिए अनिवार्य अंग है। साहित्य-कलाविहीन मनुष्य पशु है; ऐसा हमारे आचार्यों ने कहा था। अतः साहित्य की उपस्थिति हमेशा रहेगी, हां उसका रूप बदलता रहेगा। जहां तक साहित्य के प्रभाव का प्रश्न है साहित्य व्यक्ति-व्यक्ति को प्रभावित करता है, भीड़ को नहीं। साहित्य को जो पढता है या सुनता है यदि वह सहृदय है तो उस पर प्रभाव पड़ता है। कुछ रचनाएं ऐसी होती हैं और पुस्तकें भी जो अपने विचारों से अपने कथातंत्र से तथा पात्र से प्रभावित करती हैं। 'महाभारत' और 'रामायण' आज तक प्रभावित करता आ रहा है। बस इस प्रभाव के लिए वेदव्यास, वाल्मीकि एवं तुलसीदास जैसा रचनाकार भी होना चाहिए।

गोयनका जी, आप साहित्य सृजन में किस तरह के परिवर्तन अपेक्षित समझते हैं?

देखिए, साहित्य समय के साथ अवश्य बदलता है, इसी कारण साहित्य अपने समय का दर्पण होता है। समय बदलता है तो पीढी बदलती है नए रचनाकार आते हैं और वे नए समय को देखते हैं और यह बदला समाज ही उनके रचना-संसार का उत्सव बनता है। 'रामायण' और 'महाभारत' अब नहीं लिखे जा सकते परंतु उसके पात्र और मानवीय संबंधों को लेखक अपने समय अनुसार देख-परख और लिख सकता है। जैसे नरेंद्र कोहली ने रामकथा और महासमर के रूप में अपने समय के संदर्भों के साथ लिखा। पुरातन को भी लेखक वर्तमान बनाकर प्रासंगिक बना सकता है। प्रत्येक लेखक के लिए उसका वर्तमान ही सत्य है। वह उसे चाहे अतीत में ढूंढे या अपने समकालीन मानवीय समाज में पर साहित्य वर्तमान का ही दर्पण रहेगा। जब साहित्य में वर्तमान जड़ हो जाता है और पाठक अपने जिए वर्तमान को पढ़-पढ़कर साहित्य की उपेक्षा करता है तो अतीतोन्मुख साहित्य को वर्तमानोन्मुख बनाकर एक नए जीवन का संचार करता है और पाठक ऐसे साहित्य को समृद्ध करता है। इस प्रकार साहित्य में अतीत-वर्तमान के संगम की यह प्रक्रिया चलती रहती है।

गोयनका जी आप युवा लेखकों के लिए क्या कहना चाहेंगे?

दिनेश, मेरी पीढ़ी के लेखक चाहते हैं कि नए लेखक हम से बेहतर हों, जीवन को जीयें और देखें तथा साहित्य-दर्शन-धर्म-संस्कृति के ज्ञान को आत्मसात करें। पहले खूब पढें, व्यक्ति एवं समाज के बहुरूपात्मक स्वरूप का अनुभव करें और पतनशील समाज के लिए अपने देशानुकूल मंगलकारी विचार दें। प्रतिष्ठा, विज्ञापन, पुरस्कार आदि के चक्कर में ना फंसे, इसे तो आप अपनी साधना एवं मौलिक चिंतन से स्वत: प्राप्त कर लेंगे और अहंकार से दूर रहें। आज युवा पीढ़ी बाजारवाद की विकार बन रही है और परिवार, समाज एवं देश गौण होता जा रहा है। यह बड़े संकट को जन्म देगा। युवा पीढ़ी नई दुनिया के साथ जरूर चले लेकिन कुछ नया सृजन भी करे जो उनकी भारतीय पहचान उनकी भारतीयता को निरंतर सबल बनाये और देश की विघटनकारी ताकतों को नष्ट करने करके एक शक्तिशाली भारत की रचना करे।

गोयनका जी, आपने बातचीत के लिए हमें अपना बहुमूल्य दिया; आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

दिनेश आपसे बात करके अच्छा लगा। श्रेष्ठ साहित्य सृजन के लिए शुभकामनाएं।

दिनेश शर्मा
कैथल, हरियाणा

कार्यकारिणी — कन्चन वर्ल्ड — रिपोर्टर

यशपाल कंचन
मुख्य संपादक

अरुण अरोड़ा
कोऑर्डिनेटर

जगदीप सिंह
मार्केटिंग हेड
स्टेट कोऑर्डिनेटर

संसार भूषण
रिपोर्टर सिरसा

राधिका सिंह
रिपोर्टर कुरुक्षेत्र

ज्योति सिंगला
रिपोर्टर मोहाली

प्रदीप हरयाणवी
मार्केटिंग एडवाइजर

लता गोस्वामी
वकील दिल्ली हाइकोर्ट
कन्चन वर्ल्ड लीगल एडवाइजर

सतीश मंगला
स्टेट हेड

मिस मनीषा
रिपोर्टर असंध

सजंय तिरंगाधारी
रिपोर्टर जींद

सतीश शर्मा
रिपोर्टर उचाना

शाहिदा खान
क्रिएटिव हेड

मीनू चड्ढा
स्क्रिप्ट राईटर

आशीष गुप्ता
चार्टर्ड अकाउंटेंट

पारुल त्यागी
एडिटर टीम हेड

लेखराज मौर्य
हेड ब्यूरो चीफ लखनऊ

मारुत पूरी
रिपोर्टर चंडीगढ़

अंशु अरोड़ा
रिपोर्टर फरीदाबाद

प्रमोद कौशिक
रिपोर्टर कुरुक्षेत्र

अरुणदीप विर्क
रिपोर्टर सफीदों

अभिषेक त्रिपाठी
रिपोर्टर लखनऊ

विजेश कुमार
रिपोर्टर जीरकपुर

जीत पटियालवी
रिपोर्टर पटियाला

निखिल पारचा
रिपोर्टर कुरुक्षेत्र

नरेंद्र राणा
रिपोर्टर करनाल

एक प्रति की कीमत 35/- रूपये | **वार्षिक शुल्क 350/- रूपये केवल**

कन्चन वर्ल्ड को पूरे भारत में सभी जिलो में सभी शहरो में रिपोर्टर और मार्केटिंगके लिए लड़के/लड़कियां चाहिए।

इच्छुक आवेदक हमारी ईमेल आईडी या व्हाट्सएप या नम्बर पर सीधे कॉल कर सकते हैं

9215560025 Contact No. : 01686-297094

Email Id: kanchanworld0025@gmail.com

बालाजी फैबरिकेटर

नई अनाज मंडी रोड, करनाल

हमारे यहां पर जापानी चादर की चौखट व झांकी हर समय तैयार मिलती है व आर्डर पर भी तैयार की जाती हैं।

प्रवीण पाल

+91- 97292-67224 81688-13684

राष्ट्रीय कीर्ति आह्वान समिति

राष्ट्रव्यापी संस्था

नव वर्ष

Happy New Year

लोहड़ी व मकर संक्राति

की हार्दिक शुभकामनाएं

विजयपाल सिँह एडवोकेट
राष्ट्रीय संयोजक
राष्ट्रीय कीर्ति आह्वान समिति